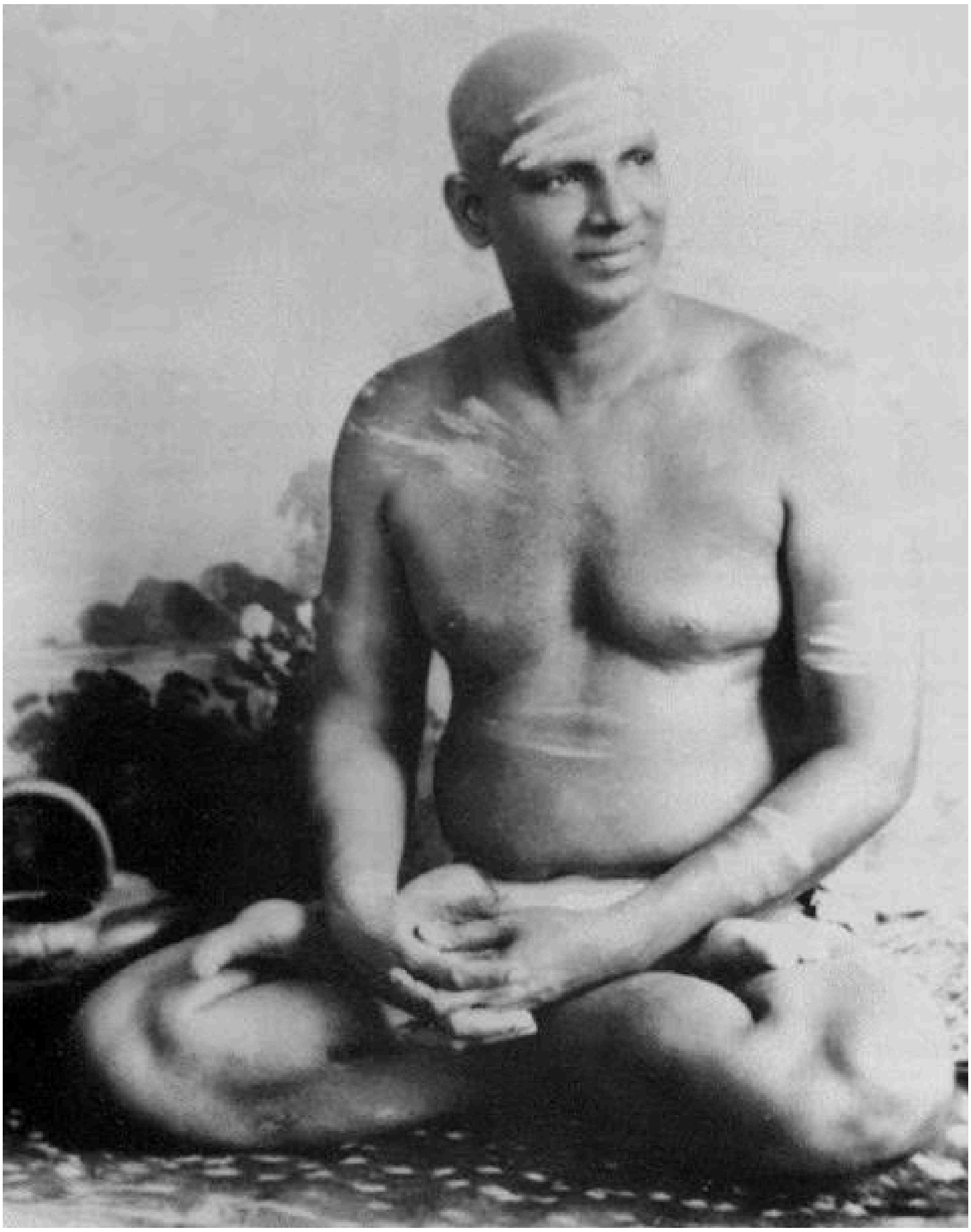
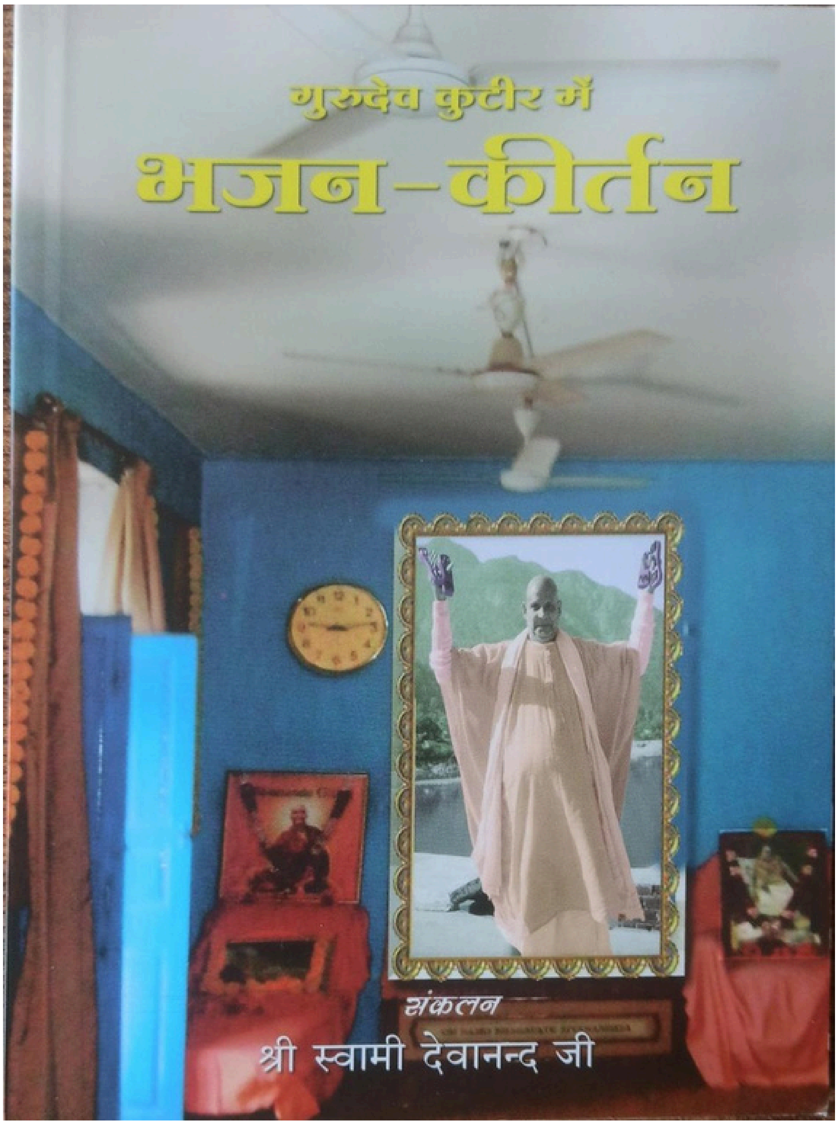




गुरुदेव कुटीर में

भजन-कीर्तन

संकलन
श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज

प्रकाशक
द डिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : डशवानन्दनगर-२४९१९२डजला:डटहरीगढ़वाल,
उत्तराखण्ड (डहमालय),भारर्
www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम संस्करण:१९८९
द्वादश संस्करण:२०१९
(१,००० प्रडयााँ)

HO45

PRICE: 50/-

'द डिवाइन लाइफ सोसायटी , डशवानन्दनगर'के डलए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाडशर्थाउन्हीं ंके द्वारा
'योग-वेदान्त फारेस्ट एकिोमीप्रेस,पो.डशवानन्दनगर,
डज. डटहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड,डपन:२४९१९२'मेंमुडिर् ।
For online orders and Cataloguevisit:disbooks.org

श्री स्वामी डशवानन्द सरस्वर्ी

दिव्यजीवनसंघ के परमपूज्यसंस्थापक

श्री स्वामी डशवानन्द जी का जन्म सन्त अप्पय्य दीडिर्ार थर्ा अन्य अनेक प्रख्यार् सन्तों ंर्था डवद्वानों ंके कुलीन पररवार में ८ डसम्बर १८८७ को हुआ था। वेदान्त के अध्ययन थर्ा उसके व्यावहाररक पि की ओर उन्मुख जीवन के प्रडर् उनमें जन्मजार् झुकाव था। उनमें प्राडणमात्र की सेवा करने की अन्तजातर् आकांिा र्था समस्त मानवों ंमें अन्तडनतडहर् एकर्ा की सहज भावना थी। यद्यडप उन्होंने एक रूडढ़वादी पररवार में जन्म डलया था, र्थाडप वह अत्यन्त उदारमना, सडहष्णु र्था धमत-परायण थे।

सेवा करने की आकांिा ने उन्हें डिडकत्सा-िेत्र की ओर आकडषतर् डकया। डफर उन्होंने उन स्थानों ंकी ओर ध्यान डदया जहााँ उनकी सेवा की अत्यडधक आवश्यकर्ा थी। इसी दृडि से वह मलाया (मलेडशया) गये। इस बीि उन्होंने एक स्वास्थ्य-पडत्रका को सम्पाडदर् करना प्रारम्भ कर डदया था। वह उसमें डनयडमर् रूप से स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्याओं ंके बारे में डलखा करर्े थे। उनका कहना था डक जन-साधारण को सही ज्ञान प्रदान करने की परम आवश्यकर्ा है। ऐसे ज्ञान का प्रिार-प्रसार उनका जीवन-लक्ष्य बन गया।

यह ईश्वर का मंगलमय डवधान ही था, डजसके कारण मन र्था शरीर के इस डिडकत्सक में र्ीव्र वैराग्य की भावना उत्पन्न हो गयी। पररणाम- स्वरूप वह अपनी जीवन-वृडत्त को त्याग कर मानव की आत्मोन्नडर् में सहायक बनने के डलए संन्यासी बन गये। ऋडषकेश को उन्होंने अपना र्प:स्थल बनाया र्था एक मनीषी, योगी, सन्त र्था जीवन्मुक्त के रूप में ख्याडर् प्राप्त की।

पूज्य स्वामी जी ने मात्र जीडवर् रहने के डलए कभी उदर-पोषण नहीं ंडकया। हााँ, उन्होंने सेवा करने के डलए जीडवर् रहना आवश्यक समझा। एक छोटी-सी जीणत-शीणत कुडटया ने-डजसमें मच्छरों-डबच्छुओं ंके अडर्ररक्त और कोई नहीं ंरहर्ा था-वषात और धूप से उनकी रिा की। कडिन र्पश्चयात का जीवन व्यर्ीर् करर्े हुए भी उन्होंने रोडगयों ंकी बहुर् सेवा की। वह दवाएाँ ले कर रोगी साधुओं ंकी कुडटयाओं ंमें जार्े थे और उनकी सेवा-शुश्रूषा करर्े थे। वह उनके डलए डभिा मााँग कर लार्े और उन्हें अपने हाथों ंसे डखलार्े थे। रोडगयों ंके डसरहाने रार्-रार् भर बैि कर उनकी

देख-भाल करना उनकी डदनियात का एक अंग बन गया था। ऱीथतयाडत्रयों ंको भगवान् का रूप मान कर वह उनकी भी सेवा मन लगा कर डकया करऱे थे।
अपने पररव्राजक-जीवन में पूज्य स्वामी जी ने पूरे भारऱ् का भ्रमण डकया। भ्रमण-काल में वे संकीर्तन करारे् और प्रविन डदया करऱे थे। स्वामी जी ने उन्ीं ंडदनों ंकैलास र्था बदरी की भी यात्राएँ कीं।ं

ऱीथतयात्रा से लौटने के बाद सन् १९३२ में उन्ोंनें पडवत्र गंगा के दडिण र्ट पर डशवानन्दाश्रम की स्थापना की। सन् १९३६ में उन्ोंनें 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' (डदव्य जीवन संघ) की स्थापना की। डकसी पररत्यक्त गोशाला की र्रह डदखायी पड़ने वाला एक टूटा-फूटा पुराना कुटीर उन्ें डमल गया। उनके डलए वह एक महल से भी बढ़ कर था। उन्ोंनें उसकी सफाई की और डफर उसी में रहने लगे। जब उनके श्रीिरणों ंके डनकट बैि कर उनके उपदेशामृऱ् का पान करने वाले भक्तों ंकी संख्या बढ़ने लगी, र्ब उसके डवस्तारण की आवश्यकऱा समझी जाने लगी। कुछ और न रहने योग्य खाली शेि ढूँढ़ डनकाले गये। इनमें कोई भी रहने का साहस नहीं ंकर पाऱा था। डदव्य जीवन संघ का शैशव इन्ीं ंअ-वासयोग्य टूटे-फूटे भवनों ंमें व्यर्ीऱ् हुआ।

श्री स्वामी डशवानन्द योग के, मानवीय किों ंके उपशमन के र्था प्रत्येक वसुतु के संश्लेषण (समन्वय) में डवश्वास रखऱे थे। स्वामी जी ने सेवा, ध्यान र्था भगवद्-साक्षात्कार के डदव्य उदात्त सन्देश को अपनी पडत्रकाओं,ं पत्रों ंर्था अपनी ३०० से अडधक पुस्तकों ंके माध्यम से संसार के कोने-कोने में प्रिाररऱ्-प्रसाररऱ् डकया। उनके डनष्ठावान् डशष्ों ंमें सभी धमों, पन्ों ंर्था सम्प्रदायों ं के अनुयायी थे।

स्वामी डशवानन्द का योग-समन्वययोग-कमतयोग, ज्ञानयोग र्था भखक्तयोग के अभ्यास के माध्यम से 'हाथ', 'मखस्तष्क' र्था 'हृदय' का सुसंगऱ् डवकास सम्पन्न करऱा है। डदव्य जीवन संघ का मुख्य उद्देश्य आध्याखत्मक ज्ञान का अडधकाडधक प्रिार-प्रसार करना है। इसके सुडवख्याऱ् संस्थापक श्री स्वामी डशवानन्द जी महाराज ने इस उद्देश्य की पूडर्त के डलए गंगा-र्ट पर खस्थऱ् अपने छोटे-से कुटीर में बैि कर र्ीस वषों र्क किोर पररश्रम डकया।

१४ जुलाई १९६३ को महात्मा श्री स्वामी डशवानन्द जी महाराज डशवानन्दनगर में खस्थऱ् गंगा-र्ट पर बने हुए अपने कुटीर में अपना पाडथतव शरीर त्याग कर महासमाडध में लीन हो गये। यद्यडप आज स्वामी डशवानन्द जी हमारे बीि नहीं ंहैं; परन्तु वह अपने द्वारा प्रारम्भ डकये गये महान् कायत का मागत-डनदेशन आज भी सूक्ष्म रूप से कर रहे हैं। प्रत्येक व्यर्ीऱ् हो जाने वाला िण उस कायत की गडऱ्-मात्रा में वृखि कर जाऱा है। अपने परमाध्यि श्री स्वामी डिदानन्द जी महाराज के नेर्ृत्व में डदव्य जीवन संघ के वररष्ठ संन्यासी डदव्य जीवन के इस डसान्त को प्रिाररऱ् करने में सदा-सवतदा रर् हैं जो पूज्य गुरुदेव के इन शब्ों ंमें समाडहऱ् है : "सेवा, प्रेम, दान, शुडिऱा, ध्यान, साक्षात्कार!"

प्रस्तावना

ॐ सद्गुरुपरमात्मने नमः

पुण्य सडलला गंगा के र्ट पर अवखस्थर् 'गुरुदेव कुटीर' प्रडर्डदन सायं संकीर्तन की डदव्य लहररयों ंसे आपूररर् हो जार्ी है। पुरवासी, अडर्डथ, अभ्यागर्, बाल-वृि, नर-नारी सभी उपखस्थर् जन आत्म-डवभोर हो उिर्े हैं। ऐसे प्रभावी डदव्य संकीर्तन का शुभारम्भ हुआ कैसे? उत्तर आप भी जाडनए- यह सब समन्वय योगीश्वर संकीर्तन-सम्राट् सद्गुरुदेव श्री स्वामी डशवानन्द जी महाराज की अनुपम संकल्प-शखक्त का ही प्रत्यि स्वरूप है।

आश्रम पहुाँच कर गुरुदेव के आध्याखत्मक पररवार में सखिडलर् होने पर मैं सत्संग में भजन-कीर्तन करर्ा था। जब श्री सद्गुरुदेव प्रसन्न हो कर कभी-कभी मुझसे कहर्े थे, 'देवानन्द संगीर् सीखो, हारमोडनयम बजाना सीखो' र्ब अननुकूलर्ा के कारण सीख न पाया। डकन्तु श्री सद्गुरुदेव का संकल्प व्यथत कैसे हो सकर्ा था? उस संकल्प ने अद्भुर् रूप से काम डकया। सन् १९६३ में 'डवजयादशमी' के शुभ डदन पूज्य श्री स्वामी नादब्रह्मानन्द जी महाराज ने मेरा हाथ पकड़ कर संगीर्-कि (Music Room) में ले गये और दृढ़ सहजर्ा से कहा- 'मैं आपको संगीर् डसखाऊाँगा, सीखए' कह कर - 'सा, रर, ग, म' सरगम में डसखाना प्रारम्भ कर डदया। कृपा के प्रत्यि दशतन कीडजए-अभ्यास करने के डलए अपना हारमोडनयम भी दे डदया। उसी डदन से मैं संगीर् का थोड़ा-थोड़ा अभ्यास भी करने लगा था। 'गुरुदेव कुटीर' में प्रडर्डदन सायं जब मैं हारमोडनयम पर उच्च स्वर में गा-गा कर कीर्तन-ध्वडनयों ंका अभ्यास करर्ा था, र्ब 'गुरुदेव कुटीर' पररसर के बचे्चे डदव्य नाम-कीर्तन से आकडषतर् हो, आ कर मेरे सामने बैि जार्े र्था कभी-कभी साथ में गाने भी लगर्े थे। बच्चों ंकी कीर्तन के प्रडर् अडर्शय रुडि को देख कर सप्ताह में एक बार अथातर् - प्रत्येक रडववार को डनयडमर् रूप से उपखस्थर् सभी ३०-४० बच्चों ंको कीर्तन-ध्वडन गा-गा कर डसखाने लगा र्था समवेर् रूप से कीर्तन करने लगा। र्दनन्तर इसी साप्ताडहक कायतक्रम ने दैडनक संकीर्तन का रूप धारण कर डलया और शनैः -शनैः बच्चों ंके अडर्ररक्त बड़े स्त्री-पुरुष, प्रौढ़-वृि भी संकीर्तन में सखिलर् हो कर मस्ती में भजन-कीर्तन करने लगे। क्यों ंन ऐसा होर्ा, क्योंडक भगवन्नाम-कीर्तन का प्रभाव अडद्वर्ीय व अवणतनीय है। श्री सद्गुरुदेव कहर्े हैं-

संकीर्तन के अडर्ररक्त कोई भी रसायन इर्ना प्रभावशाली नहीं ंहै डजससे पापयुक्त हृदय पडवत्र हो सके। नामोपैथी भव-रोग नाशक सवोत्तम औषडध है। संकीर्तन मन की िंिलर्ा का डवनाश करके एकाग्रर्ा की खस्थडर् उत्पन्न करर्ा है। संकीर्तन से मन के र्ीन दोष- मल, डविेप और आवरण नि हो जार्े हैं। र्ीन र्ाप-आडधभौडर्क, आडधदैडहक और आडधदैडवक िय हो जार्े हैं। पााँच प्रकार के रोग- अडवद्या, अखिर्ा, राग-द्वेष, देहासखक्त र्था जन्म-जरा रोग और दुःख डमट जार्े हैं। र्ीनों ंकमों-संडिर्, प्रारब्ध और डक्रयमाण का नाश हो जार्ा है। रजस् और र्मस् दूर हो मन साखिकर्ा से ओर्-प्रोर् हो जार्ा है। हृदय श्रेष्ठ और आत्म प्रोन्नर् करने वाले डविारों ंसे ओर्-प्रोर् हो जार्ा है। संकीर्तन सांसाररक भाव को ईश्वरीय प्रेम भाव में बदल देर्ा है। इससे कुसंस्कारों ं का डवनाश हो जार्ा है। पररणामर्ः भगवान् भक्त के सामने प्रकट हो जार्े हैं।

भगवान् हरर स्वयं नारद मुडन से कहर्े हैं-

नाहंवसादम वैकुण्ठे, योदिनां हृियेनच।
मद्भक्ता यत्र िायन्ति, तत्र दतष्ठादमनारि।।

अथातर् "न मैं वैकुण्ठ में रहरा् हाँ, न ही योडगयों ंके हृदय में। मैं वहााँ रहरा् हाँ जहााँ मेरे प्ेरेमी भक्त मेरे नाम का संकीर्तन करर्े हैं।" ऐसा है डदव्य संकीर्तन का प्रभाव।

परम पूज्य श्री स्वामी डिदानन्द जी महाराज (परमाध्यि, डदव्य जीवन संघ मुख्यालय, डशवानन्दनगर, ऋडषकेश) भी एक-दो बार सायं संकीर्तन में गुरुदेव कुटीर में पधारे। सभी उपखस्थर् भक्तों ंको आशीवातद डदया र्था स्व-कर-कमलों ंसे प्रसाद भी बााँटा। र्ब से बच्चों ंमें और भी उत्साह बढ़ा। परम पूज्य श्री स्वामी डिदानन्द जी महाराज कहर्े हैं-

"डदव्य नाम और ब्रह्म अडभन्न हैं। ब्रह्म की अर्र्क्त शखक्त डदव्य नाम अथातर् नाम भगवान् के रूप में प्रकट हुई है। दुडदतनों ंमें सशक्त पडवत्र डदव्य नाम ही मानवरा् का एकमात्र मुखक्त प्रदायक अवलम्बन है। संकीर्तन का दैडनक अभ्यास करने से मानवरा् वर्तमान अन्धकार के कूप से डनकल कर स्वडणतम भडवष् के प्रकाश को देख सकेगी। डनयडमर् संकीर्तन करने से व्यखक्त मृत्यु के पाश से मुक्त हो कर अमररा् को प्राप्त होर्ा है।"

आओ, हम सब डमल कर उच्च स्वर से मस्ती में गायें-

आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीततन में,
आप भी आना संसिन्तियों ंको लाना,
आ कर वंशी बजाना हमारे घर कीततन में।

संकीर्तन के डदव्य प्रभाव से प्रभाडवर् हो कर कुछ उपखस्थर् भक्त जन मुझसे पूछर्े-"आप जो कीर्तन-ध्वडन र्था भजन गार्े हैं, वे डकस 'भजन-संग्रह' पुस्तक में हैं। वे हमें कहााँ से कैसे प्राप्त हो सकर्े हैं?" मैं उनसे कहरा् डक कुछ 'कीर्तन-भजन' र्ो डकसी 'भजन-संग्रह' पुस्तक में है; पर इसमें से कुछ मेरे हृदय, मेरे मुख में हैं। र्ब वे कहर्े हैं डक जो 'कीर्तन-भजन' आप प्रडर्डदन संकीर्तन में गार्े हैं, उनको संकडलर् कर पुस्तकाकार रूप में मुडिर् करवा दीडजए, र्ो इच्छुक कीर्तन-प्ेरेमी लाभाखन्वर् हो आत्म-सुख प्राप्त करेंगे। मुडिर् करवाने का डविार डकया; परनुतु यह डविार डविार-मात्र ही रह गया, कायातखन्वर् न हो पाया। डकनुतु पुनः श्री सद्गुरुदेव महाराज की कृपा-मडहमा देखए-

एक जमतन मडहला भक्त श्रीमर्ी मेरी लूईस (Mrs. Marie Luise) आश्रम-वास के डदनों ं में श्री स्वामी हंसानन्द जी की प्ेरेरणा से प्रडर्डदन 'गुरुदेव कुटीर' में संकीर्तन में भाग ले कर आनखन्दर् होर्ी। उन्ोंनें श्री स्वामी हंसानन्द जी से डनयडमर् रूप से प्रडर्डदन गाये जाने वाले कीर्तन-भजनों ंको डलखवा कर पुस्तकाकार रूप में "गुरुदेव कुटीर में भजन-कीर्तन" नाम से १९८९ में मुिण का आडथतक भार स्वयं वहन कर ५०० प्रडर्यााँ प्रकाडशर् करवायीं।ं कीर्तन-प्ेरेडमयों ंकी खुशी का डिकाना न रहा।

श्री स्वामी हंसानन्द जी ने मेरे कथनानुसार 'गुरुदेव कुटीर' में डदनानुसार कीर्तन के रूप में (जैसे रडववार, सोमवार आडद) क्रमबि प्रारूप र्ैयार करके दे डदया। अर्ः मैं स्वामी हंसानन्द जी का आभारी हााँ।

१९-१०-१९९९ दवजयािशमी **-स्वामी ि्वानन्द**

ॐ

शाखन्त मंत्र

ॐ सवेषां स्वन्तिभवतु।सवेषांशान्तिभतवतु।
सवेषां पूर्ंणं भवतु।सवेषांमंलिंभवतु।।
सवे भविु सुन्तिनःसवेसिुदनरामयाः।
सवे भद्रादर्ण पश्यिुमाकर्दििुःभिाग्भवेत्।।

ॐ असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योदतितमय ।
मृत्योमात अमृतं िमय ।।

ॐ पूर्णतमिः पूर्णतदमिंपूर्णात्पूर्णतमिुच्यते।
पूर्णतस्य पूर्णतमिाायपूर्णतमेवावदशष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिःशान्तिः॥

नाम का काम अनन्त

१. अखण्ड श्री हररनाम संकीर्तन का सुमधुर ध्वडन नाद जहााँ र्क भी जार्ा है, वहााँ र्क के सभी प्रकार के प्रत्यि अथवा परोि अमंगलों ंका नाश घटर्ा है र्था सभी प्रकार सवतमंगलमय, सुख, समृखि, शाखन्त र्था आनन्दमय प्रभाव का डवस्तार होर्ा है।

२. जहााँ पर परम पावन श्री हररनाम संकीर्तन यज्ञ अनुडष्ठर् होर्ा है, वहााँ की पृथ्वी का कण-कण सभी र्ीथों की रज के समान अडर् पडवत्र हो जार्ा है।

३. जहााँ पर श्री हररनाम संकीर्तन यज्ञ का अनुष्ठान होर्ा है और उसमें अखण्ड ज्योडर् जलायी जार्ी है, उसके प्रभाव से आस-पास के सारे इलाके र्क का सारा र्म नाश हो जार्ा है।

४. जहााँ पर श्री हररनाम संकीर्तन यज्ञ का अनुष्ठान होर्ा है और मंगल कलश की स्थापना होर्ी है र्था उसका जल यज्ञ अनुष्ठान के समापन के बाद जहााँ-जहााँ डछड़का जार्ा है, र्हााँ-र्हााँ सारा अमंगल नाश हो कर सभी प्रकार सम्पन्नर्ा, समृखि, सुख-शाखन्त र्था परमानन्द का राज्य होर्ा है। सारे अभाव दूर हो जार्े हैं।

५. जहााँ पर श्री हररनाम संकीर्तन यज्ञ का अनुष्ठान होर्ा है वो सभी उन ८४ लाख योडनयों ं में भटक रहे जीवों ंका नाम श्रवण नाम सम्बन्ध से पाप को नाश कर दु:ख कि क्लेश से त्राण डदलार्ा है जो प्रारब्ध कमतफल भोग रहे हैं।

६. जहााँ पर श्री हररनाम संकीर्तन यज्ञ अनुष्ठान प्राकृडर्क प्रकोप, ग्रहों ंकी शाखन्त, महामारी-सूखा आडद के शमन, शाखन्त र्था डनवृडत्त के उद्देश्य से डकये जार्े हैं ऐसे महायज्ञ से ग्रह शान्त होर्े हैं, देवर्ा प्रसन्न हो जार्े हैं र्था व्याडध का सुडनडश्चर् डनवारण होर्ा है।

७. श्री हररनाम संकीर्तन यज्ञ के सावतभौम प्रभाव के डवस्तार मंगलमय प्रभाव के संदभत से जहााँ बराबर प्रभार्फेररयााँ र्था अखण्ड यज्ञ होर्े रहर्े हैं, वहााँ पशुशालाओं ंमें स्वस्थ पशु अडधक दूध देर्े हैं र्था खेर्ों ंमें अनाज अडधक उत्पन्न होर्ा है। नाम ध्वडन र्रंगों ंसे नाना प्रकार के कीटाणुओं ंका नाश होर्ा है र्था प्राकृडर्क व्याडध से छुटकारा डमलने से फसलें अच्छी होर्ी हैं।

८. सभी प्रकार के काम्य कमत, अनुष्ठानों ंकी पूडर्त, देवर्ाओं ंकी प्रसन्नर्ा, ऋखि-डसखि प्राखप्त, सुख-सम्पदा और नाम-यश हेर्ु डकये गये अनुष्ठानों ंमें व्याडध डवघ्न नाश हो कर सुडनडश्चर् फल प्राखप्त के डनडमत्त श्री हररनाम संकीर्तन अडर् सरल सहज डनरापद उपाय है।

९. जहााँ श्री हररनाम संकीर्तन यज्ञ में भगवान् के प्रेमी भक्त लोग आनन्द मग्न हो कर नृत्य करर्े हैं, नाम गान करर्े-करर्े वाणी गद्-गद् हो जार्ी है, आाँखों ंसे परमानन्द में डूबने हेर्ु प्रेमानन्द मग्न होने से प्रेमाशुरु बहर्े हैं, वहााँ श्रीहररपाषतद आडवभूतर् हो जार्े हैं।

१०. जहााँ डनत्य डनयम से श्री हररनाम संकीर्तन भक्त लोग डवह्वल हो कर गार्े हैं, वहााँ श्रीहरर आडवभूतर् हो कर इस पृथ्वी पर अवस्थान करर्े हैं।

अनुक्रमडणका

रडववार

ॐ भास्कराय दवद्महे
महिा्युदतकराय धीमदह
तन्नो आदित्यः प्रचोयात् ।।

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महिा्युदतम्।
तमोऽररं सवत पापघ्ंनं प्रर्णतोऽन्ति दिवाकरम्।।

(१) प्राथतना

जय गणेश जय गणेश जय गणेश पाडहमाम्।
श्री गणेश श्री गणेश श्री गणेश रि माम्।।

शरवणभव शरवणभव शरवणभव पाडहमाम्।
कार्डतकेय कार्डतकेय कार्डतकेय रि माम्।।

जय सरस्वडर् जय सरस्वडर् जय सरस्वडर् पाडहमाम्।
श्री सरस्वडर् श्री सरस्वडर् श्री सरस्वडर् रि माम्।।

जय गुरु डशव गुरु हरर गुरु राम।
जगद्गुरु परं गुरु सद्गुरु श्याम ।।

आडदगुरु अद्वैर्गुरु आनन्दगुरु ॐ।
डिद् गुरु डिडिन गुरु डिन्मय गुरु ॐ ।।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।।

ॐ नमः डशवाय ॐ नमः डशवाय ॐ नमः डशवाय।
ॐ नमः डशवाय ॐ नमः डशवाय ॐ नमः डशवाय॥
ॐ नमो नारायणाय ॐ नमो नारायणाय ।
ॐ नमो नारायणाय ॐ नमो नारायणाय ।।

ॐ नमो भगवर्े वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवर्े वासुदेवाय ।।
गुरुदेव कुटीर में भजन-कीर्तन

आंजनेय आंजनेय आंजनेय पाडह माम्।
हनुमन्त हनुमन्त हनुमन्त रि माम् ।।

दत्तातेर्य दत्तातेर्य दत्तातेर्य पाडह माम्।
दत्तगुरु दत्तगुरु दत्तगुरु रि माम् ।।

शंकराियत शंकराियत शंकराियत पाडह माम्।
भगवत्पाद भगवत्पाद भगवत्पाद रि माम् ।।

सद्गुरुदेव सद्गुरुदेव सद्गुरुदेव पाडह माम्।
डशवानन्द डशवानन्द डशवानन्द रि माम् ।।

गंगाराडण गंगाराडण गंगाराडण पाडह माम्।
भागीरडथ भागीरडथ भागीरडथ रि माम् ।।

ॐ शखक्त ॐ शखक्त ॐ शखक्त पाडह माम्।
ब्रह्म शखक्त डवष्णु शखक्त डशव शखक्त रि माम् ।।

ॐ आडद शखक्त महा शखक्त परा शखक्त पाडह माम्।
इच्छा शखक्त डक्रया शखक्त ज्ञान शखक्त रि माम् ।।

राजराजेश्वरर राजराजेश्वरर राजराजेश्वरर पाडह माम्।

डत्रपुरसुन्दरर डत्रपुरसुन्दरर डत्रपुरसुन्दरर रि माम् ।।

ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ तत्सत्ॐ।
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिःॐ।।

(२) डवष्णु सुतुडर्ः

गजाननं भूर्गणाडधसेडवरं,
कडपत्थजम्बूफलसारभिणम्।
उमासुरं् शोकडवनाशकारकं,
नमाडम डवघ्ेनेश्वरपादपंकजम्।

गुरुब्रतह्मा गुरुडवतष्णुः गुरुदेवो महेश्वरः।
गुरुःसािार् परं ब्रह्म रिै् श्रीगुरवेनमः।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
डवश्वाधारं गगनसदृशं मेघवणं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्ंतं कमलनयनं योडगडभध्यातनगम्ंयं,
वन्ेदे डवष्णु भवभयहरं सवतलोकैकनाथम्।।

नमाडम नारायण पाद पंकजं,
करोडम नारायण पूजनं सदा ।
वदाडम नारायण नाम डनमतलं,
रिाडम नारायण रि्मव्ययम् ।।

ॐ

ॐ गं गणेशाय नमः।
ॐ गुं गुरुभ्यो नमः।
ॐ ऐं ंसरस्वत्ैयै नमः।

(३) गणेश शरणं ....पाडह गजानन

गणेश शरणं, शरणं गणेश।
गणेश शरणं , शरणं गणेश।।

पाडह पाडह गजानन,पावतडर्पुत्रगजानन
मूषक वाहक गजानन,मोदकहस्तगजानन
िामिर कणत गजानन,डवलखम्बर्सूत्रगजानन
वामनरूप गजाननमहेश्वरपुत्रगजानन

डवघ्नडवनायक गजानन, पाद नमस्ते गजानन

(४) श्री नारायण जय नारायण

श्री नारायण जय नारायण , श्रीहरर नारायण नारायण।
श्री नारायण जय नारायण , श्रीहरर नारायण नारायण।।

(५) आपद्बान्धव नारायणा

आपद्बान्धव नारायणा, अनाथ रिक सदाडशवा।
दीनबनुधु नारायणा, दीन नाथा सदाडशवा ।।

पडर्् पावन नारायणा, पडर्ीारा सदाडशवा ।
वैकुण्ठ वासा नारायणा, कैलास वासा सदाडशवा ।।

गरुड़ वाहन नारायणा, नखन्द वाहन सदाडशवा ।
क्रिपाडण नारायणा, डत्रशूलपाडण सदाडशवा ।।

पन्नग शयना नारायणा, पन्नग भूषण सदाडशवा ।
लक्ष्मी रमणा नारायणा, पावतर्ी रमणा सदाडशवा ।।

अलंकार डप्रय नारायणा, अडभषेक डप्रय सदाडशवा।
हरर ॐ हरर ॐ नारायणा, हर ॐ हर सदाडशवा।।

Come Come O Lord Narayana Give me Darshan Sadasiva. Save me Guide me Narayana Save me Protect me Sadasiva. Thy Name is a Boat Narayana To Cross this Samsar Sadasiva. Thy Name is a Weapon Narayana To cut this evil mind Sadasiva.

पाडह मां रि मां नारायणा, पाडह
मां रि मां सदाडशवा।

(६) श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम्

पवन मन्द सुगन्ध शीर्ल, हेम मखन्दर शोडभर्म्।

डनकट गंगा बहर् डनमतल, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ।। पवन...

शेष सुडमरन करर् डनडशडदन, धरर् ध्यान महेश्वरम्।
श्री वेद ब्रह्मा करर् सुतुडर्, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ॥ पवन...

इन्द्र िन्द्र कुबेर डदनकर, धूप दीप प्रकाडशर्म्।
डसि मुडन जन करर् जय जय, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ॥ पवन...

शखक्त गौरी गणेश शारद, नारद मुडन उच्चारणम्।
योडग ध्यान अपार लीला, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ।। पवन...

यि डकन्नर करर् कौरुुक, र्ाल वीणा वेडदर्म्।
श्री लक्ष्मी कमला िमर िोले, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ।। पवन...

कै लास में एक देव डनरंजन शैल डशखर महेश्वरम्।
राजा युडधडष्ठर करर् सुतुडर्, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ।। पवन...
हेम पथ के दार दशतन, डसि मुडनजन सेडवर्म्।
डहमालय में सुख स्वरूप, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ।। पवन...

पर्त कु ण्ड के अडधक मडहमा, दश डदशानन शोडभर्म्।
नर नारायण करर् सेव, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ।। पवन...

श्री बिीनाथ के सप्त रात्र, परम पाप डवनाशनम्।
कोडट र्ीथत स्वरूप पूरण, श्री बिीनाथ डवश्वम्भरम् ।। पवन...

(७) श्रीमन्नारायण नारायण

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
लक्ष्मी नारायण नारायण नारायण ।।

बिी नारायण नारायण नारायण।
सूयत नारायण नारायण नारायण ।।

सत्य नारायण नारायण नारायण।
हरर ॐ नारायण नारायण नारायण।।

गावो नारायण नारायण नारायण ।
जपो नारायण नारायण नारायण ।।

मार्ा नारायण नारायण नारायण।
डपर्ा नारायण नारायण नारायण ।।

बनुधु नारायण नारायण नारायण।।
सखा नारायण नारायण नारायण।।

गुरु नारायण नारायण नारायण ।
सवं नारायण नारायण नारायण ।।

श्रीहरर नारायण नारायण नारायण।
भजमन्नारायण नारायण नारायण।।

(८) दीन दयालु दया करके

दीन दयालु दया करके,
भव सागर से कर पार मुझे । दीन . . .

नीर अपारनर्ीरडदसेडकडम,
धीर धरूँ अबमैंमनमें।
मेरी नाविुबायरहीमगमें,
शरणागर् जानके र्ार मुझे ।। दीन . . .

छू ट गया अब साथ मेरा,
कु छ हाथ में जोर रहा भी नहीं।ं
अब नाथ न देर लगाओ जरा,
डनज बाहु पसार उबार मुझे ।। दीन...

रे्रा नाम जहाज बड़ा जग में,
सब वेद पुराण बर्ावर् हैं।
ब्रह्मानन्द जयूूँ डदन रार् सदा प्रभु,
कीडजये पार डकनार मुझे ।। दीन...

(९) हे माधवा मधुसूदना श्री केशवा

हे माधवा मधुसूदना श्री के शवा,
नारायणा, लक्ष्मी नारायणा ।
नारायणा, श्रीमन्नारायणा,
राम कृ ष्ण गोडवन्द नारायणा ।। हे माधवा ।।
श्रीधरा के शवा दामोदरा,
अचुयुर्ानन्द हे नारायणा ।
नारायणा, श्रीहरर नारायणा,
राम कृ ष्ण गोडवन्द नारायणा ।। हे माधवा ।।

नमो माधवा, जगन्नायका, हृडषकेशवा,
हे नाग शयना, श्री शेष शयना।
नारायणा, सत्य नारायणा,
राम कृष्ण गोडवन्द नारायणा ।। हे माधवा ।।

अचुयुरा़ केशवा दामोदरा,
सखच्चदानन्द हे नारायणा ।
नारायणा, लक्ष्मी नारायणा,
राम कृष्ण गोडवन्द नारायणा ।। हे माधवा ।।

(१०) जय नारायण जय नारायण

जयनारायण जय नारायण,जयनारायणजैजैजै।
लक्ष्मीनारायण लक्ष्मी नारायण,लक्ष्मीनारायणजैजैजै।
बिीनारायण बिी नारायण,बिीनारायणजैजैजै।
सूयतनारायण सूयत नारायण,सूयतनारायणजैजैजै।
सत्यनारायण सत्य नारायण,सत्यनारायणजैजैजै।
जयमहादेव जै जय महादेवजै,जयमहादेवजैजैजैजै।
जयडशवशंकर जय डशवशंकर,जयडशवशंकरजैजैजै।
जयसीऱाराम जै जय सीऱारामजै,जयसीऱारामजैजैजैजै।
जयराधेश्याम जै जय राधेश्यामजै,जयराधेश्यामजैजैजैजै।
जयहनुमान् जै जय हनुमान्जै,जयहनुमान्जैजैजैजै।
जयजगन्नाथ जै जय जगन्नाथजै,जयजगन्नाथजैजैजैजै।
जयश्रीडनवास जै जय श्रीडनवासजै,जयश्रीडनवासजैजैजैजै।
जयमहालक्ष्मी जै जय महालक्ष्मीजै,जयमहालक्ष्मीजैजैजैजै।
जयमहाकाडल जै जय महाकाडलजै,जयमहाकाडलजैजैजै।
जयगुरुदेव जै जय गुरुदेव जै,जयगुरुदेवजैजैजैजै।

सोमवार

ॐतत्पुरुषाय दवद्महे
महिीवाय धीमदह
तन्नो रुद्रः प्रचोियात् ।।

दिधशंतुिषाराभं क्षीरार्णतव समुद्भवं।
नमादम शदशनं सोमं शम्भोमुतकुटभूषर्णम्।।

(११) ईश सुतुडर्ः

वन्‍्दे शमुभुमुमापडर्ं सुरगुरुं वन्‍्दे जगत्कारणं,
वन्‍्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्‍्दे पशूनां पडर्म् ।
वन्‍्दे सूयतशशांकवडिनयनं वन्‍्दे मुकु न्दडप्रयं,
वन्‍्दे भक्तजनाश्रयं ि वरदं वन्‍्दे डशवं शंकरम् ।।

शान्‍ंतं पद्मासनस्थं शशधरमुकु टं पंविक्‍ंत्रं डत्रनेत्‍ंरं,
शूलं वज्‍ंरं ि खंगं परशुमभयदं दडिणांगे वहन्तम्।
नागं पाशं ि घण्‍ां िमरुकसडहर्ं िांकु शं वामभागे,
नानालंकारदीप्‍ंतं स्फडटकमडणडनभं पावतर्ीशं नमाडम ।।

न्द्रिोद्भाडसर् शेखरे िर हरे गंगाधरे शंकरे,
सपैभूतडषर् कण्ठकणतडववरे नेत्रोत्थ वैश्वानरे।
दखन्तत्वकृ्कृर् सुन्दराम्बरधरे त्‍ैरैलोक्सारे हरे,
मोिाथं कुरुडित्तवृडत्तमिलां अन्‍्यैसुतु डंकं कमतडभः ॥

(१२) ॐ डशव ओंकारा जय जय

ॐडशवओंकाराजयजय। भज डशव ओंकारा ।।
ब्रह्माडवषुणुसदाडशवा।हर हर हर महादेवा ॥
डशवडशवडशवडशवसदाडशवा। हर हर हर हर महादेवा ।।

(१३) िद्रािकम्

नमामीशमीशान डनवातण रूपम्,
डवभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपम्।
अजं डनगुतणं डनडवतकल्‍पं डनरीहम्,
डिदाकाशमाकाश वासं भजेऽहम्।।

डनराकारमोंकार मूलं रुुरीयम्,
डगराज्ञान गोर्ीर्मीशं डगरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालुम्,
गुणागार संसारपारं नर्ोऽहम् ।।

रुुषाराडि संकाश गौरं गभीरम्,
मनो भूर् कोडट प्रभा स्वर् शरीरम्।

सुफुरन्मौडल कल्लोडलनी िारु गंगा,
लसत्फाल बालेन्दु कणे्ठे भुजंगम् ।।

लितुकुण्डलं शुभ्रनेत्रं डवशालम्,
प्रसन्नाननं नीलकण्ंठं दयालुम्।
मृगाधीश िमातम्बरं मुण्डमालम्,
डप्रयं शंकरं सवत नाथं भजाडम ।।

प्रिण्ंडं प्रकृिं प्रगल्ंभं परेशम्,
अखण्ंडं भजे भानु कोडट प्रकाशम्।
त्रयीशूल डनमूतलनं शूल पाडणम्,
भजेऽहं भवानीपडर्ं भाव गम्यम् ॥

कलार्ीर् कल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्द दार्ा पुराररः।
डिदानन्द सन्दोह मोहपहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथाररः ॥

न यावद् उमानाथ पादारडवन्दम्,
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न र्ावत्सुखं शाखन्त सन्ताप नाशम्,
प्रसीद प्रभो सवत भूर्ाडधवासम् ॥

न जानाडम योगं जपं नैव पूजाम्,
नर्ोऽहं सदा सवतदा शमं्भुं र्ुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ र्ार्प्यमानम्,
प्रभो पाडह आपन्नमामीश शम्भो ।

िािाकडमदं प्रोक्तम्, डवप्रेण हर र्ोषये।
येपिखन्त नरा भक्तया र्ेषां शमु्भुः प्रसीदडर् ।।

नामावली

ॐ नमः डशवाय ॐ नमः डशवाय।
ॐ नमः डशवाय ॐ नमः डशवाय॥
डशवाय नमः ॐ नमः डशवाय।
डशवाय नमः ॐ नमः डशवाय॥

(१४) हर गाओ डशव गाओ

हर गाओ डशव गाओ,
हर हर डशवशंकर गाओ ।। हर गाओ ।।

जय उमानाथ जय मन्दनान्तक,
जय डशव डत्रपुरारी गाओ।
मि िम िम िम िमरू बाजे,
नखन्द वाहन गाओ।
जय उमा महेश्वर गाओ ।। हर गाओ ।

जय गंगाधर जय डवशे्वेश्वर,
जय जय भवानीवर गाओ।
पाप डविमोन भवा डनरंजन,
डशव मन मोहन गाओ।
जय उमा महेश्वर गाओ ।। हर गाओ ।।

जय नाग दमन जय नाग भूषण,
जय डशव गण भूषण गाओ।
कल्मष मिोन भव भय हरणा,
डशव पंनिन गाओ।
जय उमा महेश्वर गाओ। हर गाओ ।।

(१५) ॐ डशव ॐ डशव परात्परा

ॐडशव ॐ डशव परात्परा।
ओंकारा डशव र्व शरणम्।।

नमाडम शंकर भजाडम शंकर।
डगररजा शंकर र्व िरणम्।।

गौरी शंकर र्व शरणम्। भवाडन
शंकर र्व िरणम् ।।

शम्भो शंकर र्व शरणम्।
उमा महेश्वर र्व शरणम्।

(१६) शंकर महादेव देव सेवर् सब जाके

शंकर महादेव देव सेवर् सब जाके,

जटा मुकुट सीस गंगा।
वहन ऱ्रे अडर् प्रिण्ड,
गौरी अरधंग संग भंग रंग साजे । शंकर ।।

ध्यावर् सुर नर मुनीश,
गावर् डगररजा डगरीश ।
पावर् नहीं ंपार शेष, नेडर् नेडर् पुकारे ।। शंकर।।

भरणर् रुुलसी दास,
डगररजापडर् िरण आस।
ऐसे वर वेष नाथ, भक्त हेरुु ऱ्ाके । शंकर ।।

(१७) शंकर जी का िमरू बोले

शंकर जी का िमरू बोले
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम ।। श्रीराम।।

मीरा बाई की इकऱ्ारर बोले
राधे श्याम राधे श्याम राधे
श्याम राधे श्याम ।। श्रीराम ।।

रुुकाराम की वीणा बोले
डबट्ठल डबट्ठल जय हरर नाम
डबट्ठल डबट्ठल जय हरर नाम ।। श्रीराम ।।

सूरदास की इकऱ्ारर बोले
गोडवन्द गोडवन्द राधेश्याम
गोडवन्द गोडवन्द राधेश्याम ॥ श्रीराम ।।

रामदास की कुबड़ी बोले
रघुपडर् राघव राजा राम ।
रघुपडर् राघव राजा राम ॥ श्रीराम ॥

कबीरदास की इकऱ्ारर बोले
सोऽहं सोऽहं जय हरर नाम
सोऽहं सोऽहं जय हरर नाम ।। श्रीराम ।।

एकनाथ की डिपली बोले
डदगम्बरा डदगम्बरा
श्री पाद बल्लभ डदगम्बरा

दत्तात्रेया डदगम्बरा ।। श्रीराम ।।

हरर ॐ सद्गुरु ओंकारा
नर् जन हृदय कमल भ्रमरा
डदगम्बरा डदगम्बरा
दत्तात्रेया डदगम्बरा ।। श्रीराम ।।

गुरुनानक की वाणी बोले
सत्यनाम सत्यनाम
सत्यनाम सत्यनाम ।। श्रीराम ।।

आनन्दाश्रम कण कण बोले
श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम ।। श्रीराम।।

डशवानन्द की वाणी बोले
श्याम श्याम राधे श्याम
श्याम श्याम राधे श्याम ।। श्रीराम ।।

(१८) खड़ी हाँ द्वार दशतन को

खड़ी हाँ द्वार दशतन को
शरण डशव जी की आयी हाँ।
अगर मैं जल िढ़ारी् रो्,
यहााँ मछडलयों ंका जिूा है।
इसीडलए पैर नहीं ंपड़रा्,
रे्रे मखन्दर में आने को ।। खड़ी ।।

अगर मैं दूध िढ़ारी् रो्,
यहााँ बछड़ों ंका जिूा है।
इसीडलए पैर नहीं ंपड़रा्,
रे्रे मखन्दर में आने को । खड़ी ।

अगर मैं फूल िढ़ारी् रो्,
यहााँ भौरों ंका जिूा है।
इसीडलए पैर नहीं ंपड़रा्,
रे्रे मखन्दर में आने को । खड़ी ॥

अगर मैं फल िढ़ारी् रो्,
यहााँ पडियों ंका जिूा है।
इसीडलए पैर नहीं ंपड़रा्,
रे्रे मखन्दर में आने को ।। खड़ी ।।

अगर मैं डसर झुकार्रीर्ो,
यहााँ पापों ंका भारीहै।
इसीडलए पैर नहीं ंपड़र्ा ,
र्ेरे मखन्दर में आने को ।। खड़ी॥

(१९) हमारे भोले बाबा को डभखारर न समडझयो

हमारे भोले बाबा को डभखारर न समडझयो,
हमारे भोले बाबा के हाथ में डत्रशूला,
डत्रशूला को देख के संहारर न समडझयो ।। हमारे ।।

हमारे भोले बाबा के हाथ में है िमरू,
मिरू को देख के, िमरू को देख के,
मदारर न समडझयो । हमारे ।।

हमारे भोले बाबा के साथ में है बैला,
बैला को देख के, बैला को देख के,
व्यापारर न समडझयो । हमारे ।।

हमारे भोले बाबा के संग में है गौरी,
गौरी को देख के, गौरी को देख के,
संसारर न समडझयो ।। हमारे ।।

(२०) ईश्वर को जानो बन्र्दे

ईश्वर को जानो बन्र्दे, माडलक र्ेरा वही है।
कर ले रू् याद डदल से, हर जग में वो सही है ।। ईश्वर को।।

भूमी अगन पवन में, सागर पहाड़ वन में।
उसकी सभी भुवन में, छाया समा रही है । ईश्वर को ।।

उसने रु्झे बनाया, जग खेल है डदखाया।
रू् क्ों ंडफरे भुलाया, उमर डबर्ा रहा है ।। ईश्वर को ।।

डवषयों ंकी छोड़ आशा, सब झ्रू है र्माशा।
डदन िार की डदलासा, माया फाँसा रही है। ईश्वर को ।।

दुडनया से डदल हटा ले, प्रभु ध्यान में लगा ले।
ब्रह्मानन्द मिो पा ले, र्न का पर्ा नहीं ंहैं। ईश्वर को ।

नामावली

शंकरः डशवा शंकरः डशवा।
शम्भो महादेव शंकरः डशवा।
सुखकर सुखकर शंकरः डशवा ।।
दु:खहर दु:खहर शंकरः डशवा
पापहर शोकहर शंकरः डशवा ॥
र्ापहर पापहर शंकरः डशवा ।।
डशव डशवडशवडशवशंकर:डशवा।
हर हरहरहरशंकर:डशवा।।

(२१) मुझे है काम ईश्वर से

मुझे है काम ईश्वर से, जगर् रूिे र्ो रूिन दे ।।
बिै सन्तन की संगर् में, करूँ कल्याण मैं अपना ।
लोग दुडनया के भोगों ंमें, मौज लूटे र्ो लूटन दे ॥ मुझे ॥

कुटुम्ब पररवार सुर् दारा, माल धन लाज लोकन की।
संग सन्तों ंका करने से, अगर छूटे र्ो छूटन दे। मुझे ॥

हरर का नाम लेने की, लगी मन में लगन मेरे।
प्रीडर् दुडनया के लोगों ंसे, अगर टूटे र्ो टूटन दे ।। मुझे ॥

मेरे डशर पाप की मटकी, मेरे गुरुदेव ने झटकी।
ओ ब्रह्मानन्द ने पटकी, अगर फूटे र्ो फूटन दे। मुझे ॥

नामावली

हरर ॐ रामसीर्ा राम।
हरर ॐ कृष्णराधे श्याम।।
हरर ॐ रामसीर्ा राम।
हरर ॐ कृष्णराधे श्याम।।

(२२) ईश्वर र्ूू है दयाला

ईश्वर र्ूू है दयाला , दु:ख दूर कर हमारा।
र्ेरी शरण में आया , प्रभु दीडजए सहारा ।। ईश्वर।।

रू् है डपर्ा व मार्ा, सब डवश्व का डवधार्ा।
र्ुझ सा नहीं ंहै दार्ा, र्ेरा सभी सहारा ।। ईश्वर ।।

भूमी आकाश र्ारे, रडव ि◌न्द्र डसन्ुधु सारे।
र्ेरे हुकुम में सारे, सबका रू् ही अधारा ।। ईश्वर ।।

जग ि◌क्र में ि◌ढ़ा हाँ, भव डसन्ुधु में पड़ा हाँ।
दर पे र्ेरे खड़ा हाँ, अब दे मुझे डददारा ।। ईश्वर ।।

अपनी शरण में लीजे, सब दोष दूर कीजे।
ब्रह्मानन्द दान दीजे, र्ुझ नाम डनडवतकारा ।। ईश्वर ।।

(२३) ईश्वर रू् दीनबन्ुधु

ईश्वर रू् दीनबन्ुधु, हम दास हैं र्ुम्हारे ।
अपनी दया नजर से, सब दोष हर हमारे ।। ईश्वर ।।

हम बाल हैं अजाने, र्ुझ रूप को न जाने ।
पूरण सभी डिकाने, कहर्े हैं वेद सारे ।। ईश्वर ।।
रू् है ि◌रा ि◌र में, जंगल डगरर नगर में।
सब जीव नारर नर में, र्ुमरे सभी सहारे । ईश्वर ।।

भव डसन्ुधु है अपारा, बहर्ा हाँ बिी धारा।
नहीं ं दूसरा सहारा, प्रभु दीडजए डकनारा। ईश्वर ।।

माया के जाल में माही, हम र्ो रहे फसाई।
ब्रह्मानन्द ले छुड़ाई, करुणाडनधान प्यारे ।। ईश्वर ।।

(२४) डलंगािकम्

ब्रह्ममुरारर-सुराडिर्् डलंगं,
डनमतल-भाडषर्-शोडभर्-डलंगम्।
जन्मज-दु:ख-डवनाशक-डलंगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ।।१।।

देवमुडन-प्रवराडिर्् डलंगं,
कामदहं करुणाकर-डलंगम्।
रावण-दपत-डवनाशन-डलंगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ॥२॥

सवत-सुगखन्ध-डवलेडपर्-डलगं,
बुखि-डववितन-कारण-डलंगम् ।
डसि-सुरासुर-वखन्दर्-डलंगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ॥ ३॥

कनक-महामडण-भूडषर्-डलंगं,
फडणपडर्-वेडिर्-शोडभर्-डलंगम्।
दिसुयज्ञ-डवनाशन-डलगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ॥ ४॥

कुंकुमि–न्दन-लेडपर्-डलगं,
पंकज-हार-सुशोडभर्-डलंगम्।
संडिर्-पाप-डवनाशन-डलंगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ॥ ५॥

देवगणाडितर्-सेडवर्-डलगं,
भावैभतखक्तडभरेवि डलंगम्।
डदनकर-कोडट-प्रभाकर-डलगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ॥ ६॥

ाअिदलोपरर-वेडिर्-डलंगं,
सवतसमुद्भव-कारण-डलंगम्।
ाअिदररि-डवनाशक-डलंगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ॥ ७ ॥

सुरगुरु-सुरवर-पूडजर्-डलंगं,
सुरवन-पुष्प-सदाडितर्-डलंगम्।
परात्परं परमात्मक डलंगं,
र्त्प्रणमाडम सदाडशवडलंगम् ॥ ८॥

डलंगािकडमदं पुण्यं यः पठेखच्छवसडन्नधौ।
डशवलोकमवाप्नोडर् डशवेन सहमोदर्े॥९॥

नामावली

ॐ नमः डशवायःॐनमः डशवाय।
ॐ नमः डशवायॐनमः डशवाय॥

डशवाय नमःॐडशवाय नमः ।
डशवाय नमःॐडशवाय नमः ।।

डशव डशव डशवडशवडशवाय नमः।

हर हर हर हर नमः डशवाय॥

मंगलवार

ॐ अंारिकाय दवद्महे
शन्तक्तहिाय धीमदह।
तन्नो भौमः प्रचोयात् ।।

धरर्णीभत समूभूतं दवि्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शन्तक्तर्हिं च मंलिं प्रर्णमाम्यहम्।।

(२५) नारायण सुतुडर्ः

डजिे कीर्तय केशवं मुरररपुं िेऱो भज श्रीधरं,
पाडण द्वन्द्व समितयाचुयुर् कथाश्श्श्रोत्र द्वय त्ंवं शृणु।
कृष्ंणं लोकय लोिनद्वय हरेगतच्छांडि युग्मालयं,
डजि िाण मुकुन्दपाद रुलसी मूधतन्नमा धिोजम् ॥

हे गोपालक! हे कृपाजलडनधे! हे डसनुधु कन्यापरे!
हे कंसान्तक! हे गजेन्द्र करुणापारीण! हे माधव!
हे रामानुज! हे जगत्त्रयगुरो ! हे पुण्डरीकाि!माँ
हे गोपीजन नाथ! पालय परंजानाडम न त्वां डवना।।

(२६) यमुना-ऱीर-डवहारी

यमुना-ऱीर-डवहारी, वृन्दावन-संारिी।
गोवधतन-डगरर-धारी, गोपाल-कृष्ण मुरारी ॥

दशरथ-नन्दन राम राम, दशमुख मदतन राम राम।
पशुपडर्-रंजन राम राम, पाप-डवमोिन राम राम ॥

अयोध्यावासी राम नमो, गोकुलवासी कृष्ण नमो ।
वैकुण्ठवासी डवष्णु नमो, कैलासवासी शंकर नमो ।

नामावली

जय श्री राधेजयनन्द नन्दन।
जय जय गोपीजनमन रंजन।।

(२७) सुडमरन कर ले मेरी मना

सुडमरन कर ले मेरी मना।
मेरी बीर् गयी उमर हरर नाम डबना ।। सुडमरन ।।
कूप नीर डबन, धेनु िीर डबन, धरर्ी मेह डबना।
जैसे र्ुवर फल डबन हीना, र्ैसे प्राडण हरर नाम डबना ।। सुडमरन ॥

देह नैन डबन, रैन िन्द्र डबन, मखन्दर दीप डबना।
जैसे पखण्डर् वेद डवहीना, र्ैसे प्राडण हरर नाम डबना ।। सुडमरन ॥

काम क्रोध मद लोभ डनहारो, ढूाँढ ले अब सन्त जना।
कहे नानकशा सुनो भगवन्ता, दुडनया में नहीं ंकोई अपना ॥ सुडमरन ॥

(२८) नटवरलाल डगररधर गोपाल

नटवरलाल डगररधर गोपाल,
जय जय नन्दा यशोदा के बाल।
सार सार सबके सार,
राधा रडसक वर रास डवहार ।। नटवर ।।

स्फडटक स्फडटक मय गोपी मण्डल धाम,
गोडप गोडप मध्य मरकर् श्याम।
नटवरलाल डगररधर गोपाल ।। नटवर ।।
धन्य धन्य वज्र गोपी धन्य हो,
धन्य वृन्दावन कुं ज धन्य हो,
व्रज मृग खग सब धन्य धन्य हो,
व्रज रज यमुना पुडलन धन्य हो ।। नटवर ।।

शरद पूडणतमा डनमतल यमुना,
अद्भुर् रास महोत्सव अनुपम ।
सार सार सबके सार,
राधा रडसक वर रास डवहार ।। नटवर ।।

(२९) पग घुाँघरु बााँध मीरा निी रे

पगघुाँघरुबााँध मीरा निी रे।
मीरानिीरे, मीरा निी रे । पग॥

डवषकाप्याला राणा जी ने भेजा,

पीबर् मीराहासीरे।
लोग कहेमीराभईबावरी,
सास कहेकुलनाशीरे॥पग॥

साँप डपटारा राणा जी ने भेजा,
नव लख हार कर पहना रे।
मीरा के प्रभु डगररधर नागर,
आपही हो गयी दासी रे । पग ।।

(३०) संगर् सन्तन की कर ले

संगर् सन्तन की कर ले,
जनम का साधन कुछ कर ले।
साधन कुछ कर ले,
जनम का साधन कुछ कर ले । संगर् ॥
कहाँ से आया कहाँ जायेगा,
ये कुछ मालूम करना।
सन्तन की शरण जाके बाबा,
जनम मरण दूर कर ले रे भाई ॥ संगर्॥

उत्तम नर देह पाया प्राणी,
इसका डहर् कुछ कर ले।
दो डदन की डजन्दगाडन रे बन्ेदे,
डशयार हो कर िलना रे भाई ॥ संगर् ॥

कहर् कबीर सुनो भाई साधो,
बार-बार नहीं ंआना रे भाई।
अपना डहर् कुछ कर ले प्यारे,
आखर इकेला जाने रे भाई ।। संगर् ।।

(३१) डजस हाल में, डजस देश में, डजस वेष में रहो

डजस हाल में, डजस देश में, डजस वेष में रहो।
राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो ।।

डजस काम में, डजस धाम में, डजस गाँव में रहो।
राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो ।।

डजस संग में, डजस रंग में, डजस ढंग में रहो।
राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो ।।

डजस योग में, डजस भोग में, डजस रोग में रहो।
राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो ।।

संसार में, पररवार में, व्यवहार में रहो।
राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो ।।

(३२) मदन मोहन कदम्ब वन में

मदन मोहन कदम्ब वन में, खड़े बंसी बजारे् हैं।
कभी गंगा कभी यमुना, कभी सरयू नहारे् हैं।। मदन ॥

कभी मथुरा कभी गोकुल, कभी वृन्दावन में रहरे् हैं।
कभी गोडपयों,ं कभी ग्वालों,ं कभी गौवों ंको निारे् हैं। मदन ॥

कभी राधा, कभी रुखिणी, कभी भामा को सर्ारे् हैं ।॥
कभी माखन, कभी डमश्री, कभी दडहया ि्ुरारे् हैं।। मदन ॥

कभी शंखा, कभी मुरली, कभी घुंगरू बजारे् हैं।।
कभी सूरज, कभी ि्न्दा, कभी र्ारों ंमें छुपरे् हैं।।मदन ॥

कभी रामा, कभी कृष्णा, कभी वह डवष्णु बनरे् हैं।
कभी रावण, कभी कंसा, कभी डहरण्यिा को माररे् हैं। मदन ॥

कभी ऋडषयों,ं कभी मुडनयों,ं कभी भक्तों ंको ररझारे् हैं।।
कभी डकसी रूप, कभी डकसी रंग, कभी सत्संग में डमलरे् हैं।।मदन ॥

(३३) डमला दो श्याम से ऊधौ

डमला दो श्श्यम से ऊधौ, र्ेरा गुण हम भी गावेंगे ।। डमलादो॥

मुकुट डसर मोर पंखन का, मकर कुण्डल हैं कानों ंमें।
मनोहर रूप मोहन का, देख डदल को ररझावेंगे ।। डमला दो ॥

हमन को छोड़ डगररधारी, गये जब से नहीं ंआये।
रिण में शीश धर करके, डफर उनको मनावेंगे ।। डमला दो ॥
प्र्ेम हमसे लगा करके, डबसारा नन्द नन्दन ने।
हर्ाशा हो गयी हमसे, अरज अपने सुनावेंगे ॥ डमला दो ॥

कभीडफर आये गोकुल में, हमें दशतन डदलावेंगे।
वोब्रह्मानन्द हम डदल से, नहीं ंउनको भुलावेंगे ।। डमलादो॥

नामावली

हरर ॐ राम सीर्ा राम ।
हरर ॐ कृ ष्ण राधे श्याम ।।
हरर ॐ जय जय राधे श्याम।
रर ॐ जय जय राधे श्याम ।।

(३४) मेरा श्यामा बड़ा अलबेला

मेराश्यामा बड़ा अलबेला।
मेरीमटकी को मार गया ढेला ।। मेरा ॥

कभीगंगा के र्ीर, कभी यमुना के र्ीर।
कभीसरयू के र्ीर अकेला ।। मेरा ॥

कभी गोडपयों ंके संग, कभी ग्वालों ंके संग।
कभी गौवें िरावे अकेला ।। मेरा ।।

कभी भामा के संग, कभी रुखिणी के संग।
कभी राधा के संग अकेला ॥ मेरा ॥

कभी सूरज के संग, कभी िन्दा के संग।
कभी र्ारों ंसे घेरा अकेला ।। मेरा ॥

कभी सन्तों ंके संग, कभी भक्तों ंके संग।
कभी मस्ती में बैिा अकेला ॥ मेरा ।।

(३५) दशतन दो घनश्याम

दशतन दो घनश्याम, नाथ मेरी अखयााँ प्यासी रे।
मन मखन्दर की ज्योडर् जगा दो, घट घट वासी रे।।॥ दशतन दो . . .

मखन्दर-मखन्दर मूरर् र्ेरी, डफर भी न देखी सूरर् र्ेरी।
युग बीर्े न आई डमलन की, पूरणमासी रे ।। दशतन दो...

द्वार दया का जब र्ू खोले, पंिम स्वर में गूाँगा बोले।
अन्धा देखे लंगड़ा िल कर, पहुाँिे काशी रे ॥ दशतन दो...

पानी पी कर प्यास बुझाऊँ , नैनन को कै से समझाऊँ ।
ऱ्रे भजन में सब कु छ पाऊँ , डमटे उदासी रे।। दशतन दो...

डनबतलके बलधनडनधतनके,रुमरखवालेभक्तजननके।
ऱ्रे भजन में सब कु छ पाऊँ , डमटे उदासी रे ।। दशतन दो . . .

नाम जपे पर रुझे न जाने, उनको भी रू अपना माने।
ऱ्री दया का अन्त नहीं ं है, हे दुःख नाशी रे। दशतन दो...

आज फै सला ऱ्रे द्वार पर, मेरी जीऱ् है ऱ्री हार पर।
हार जीऱ् है ऱ्री, मैं ऱ्ो िरण उपासी रे ।। दशतन दो...

द्वार खड़ा कब से मर्वाला, माँगे रुमसे हार रुम्हारा।
नरसी की ये डबनऱ्ी सुन लो, भक्त डवलासी रे ॥ दशतन दो . . .

लाज न लुट जाय प्रभु ऱ्री, नाथ करो न दया में देरी।
ऱ्ीनों ंलोक छोड़ कर आओ, गगन डनवासी रे॥ दशतन दो...

(३६) श्री कृष्ण गोडवन्द हरे मुरारे

श्रीकृष्ण गोडवन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।
हेनाथ नारायण वासुदेव, हे नाथ नारायण वासुदेव॥

बुधवार

ॐ नारायर्णाय दवद्महे
वासुिेवाय धीमदह ।
तन्नो दवष्णु: प्रचोियात् ।।

दप्रयंगुदलकाश्यामं रूपेर्णाप्रदतमं बुधम्।
सौम्यं सौम्युर्णोपेतं तं बुधं प्रर्णमाम्यहम्।।

(३७) श्रीकृष्ण स्तुदत:

कस्तूरी-डर्लकं ललाट-फलके वि:स्थले कौस्तुभं,
नासाग्रे नव-मौखक्तकं करर्ले वेणु करे कंकणम्।।
सवांगं हररचन्दनं ि कलयन् कण्ठे ि मुक्तामडण,
गोपस्त्री-पररवेडिर्ो डवजयर्े गोपालिूडामडण:।।

कृष्णो रिरु नो जगत्रयगुरु: कृष्णं नमस्याम्यहं,
कृष्णेनामरशत्रवो डवडनहर्ा: कृष्णाय र्िै नम:।
कृष्णादेव समुखत्थर्ं जगडददं कृष्णस्य दासोऽस्म्यहं,
कृष्णे डर्ष्ठडर् सवतमेर्दखलं हे कृष्ण रिस्व माम्।।

(३८) कमला वल्लभ गोडवन्द माम्

कमला वल्लभ गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा।।
मनीयानन गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा।।
नन्द नन्दना गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा।।
नवनीर्िोरा गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा।।
वेणुडवलोला गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा॥
डवजय गोपाला गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा।।
पडर्र् पावना गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा।।
पडर्धारा गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा।।
भक्तवत्सला गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा॥
भागवर् डप्रय गोडवन्द माम्। पाडह कल्याणकृष्णागोडवन्दा॥

(३९) मुरडल मनोहर राधे श्याम

मुरडल मनोहर राधे श्याम।
गोपी बल्लभ राधे श्याम ॥ मुरडल ॥

देवकी नन्दन राधे श्याम ।
राधे श्याम जय राधे श्याम ॥ मुरडल॥

सीर्ा राम जय सीर्ा राम ।
राधे श्याम जय राधे श्याम ॥ मुरडल॥

(४०) कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे

कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे, दुःखयों ंके दुःख दूर करे।
जय जय जय जय कृष्ण हरे, जय जय जय जय कृष्ण हरे ॥ कृष्ण हरे . . .

जब िारों ंर्फ अ ाँडधयारा हो, आशा का रू् डकनारा हो।
और कोई न जीवन भवदा हो, डफर रू् ही बेड़ा पार करो ॥ कृष्ण हरे . . .

रू् िाहे र्ो सब कुछ करर्े, डवष को भी अमृर् करर्े।
पूरण करर्े उसकी आशा, जो भी र्ेरा ध्यान धरे ।। कृष्ण हरे...

(४१) कृष्ण गोडवन्द गोडवन्द गार्े िलो

कृष्ण गोडवन्द गोडवन्द गार्े िलो।
मन को डवषयों ंके डवष से हटार्े िलो । कृष्ण...

देखना इखन्द्रयों ंके न घोड़े भगे,
रार् डदन इनपे संयम के कोड़े लगे।
अपने रथ को सुमागत बढ़ार्े िलो ।। कृष्ण...

नाम जपर्े िलो काम करर्े िलो,
नाम धन का खजाना बढ़ार्े िलो ।
सुख में सोना नहीं, ं दुःख में रोना नहीं, ं
प्ेरम भखक्त के आाँसू बहार्े िलो ।। कृष्ण...

लोग कहर्े हैं भगवान् आर्े नहीं, ं
धु्रुव की र्रह से बुलार्े नहीं। ं

भक्त प्रह्लाद के जैसा रटना करो ।। कृष्ण...

लोग कहरे् हैं भगवान् खारे् नहीं, ं
शाक डवदुर घर के जैसे खलारे् नहीं। ं
भक्त शबरी के जैसे खलाया करो ।।कृष्ण...

लोग कहरे् हैं संकट में आरे् नहीं, ं
भगवान् आरे् नहीं ं
सरी् िौपदी की र्ह से बुलारे् नहीं। ं कृ ष्ण...

टेर गज की र्ह से सुनारे् िलो ॥
ाहेिं काशी िलो, िाहे मथुरा िलो,
ाहेिं प्रयागा िलो, िाहे अयोध्या िलो।
पे्रेमभखक्तके मागतबढ़ारे्लो।।कृष्ण...

याद आवेगा प्रभु को कभी न कभी,
दास पावेगा प्रभु को कभी न कभी।
ऐसा डवश्वास मन में जमारे् िलो । कृ ष्ण...

(४२) भजो राधे गोडवन्द

भजो राधे गोडवन्द, गोपाला रे्रा प्यारा नाम है।
गोपाला रे्रा प्यारा नाम है, नन्दलाला रे्रा प्यारा नाम है। भजो . . .

मोर मुकुट माथे डर्लक, गल वैजन्ती माला
प्रभु गल वैजन्ती माला, कोई कहे वसुदेव का नन्दन
कोई कहे नन्दलाला, प्रभु कोई कहे नन्दलाला ॥ भजो...

जल में गज को ग्राह ने घेरा, जल में िक्र िलाया
प्रभु जल में िक्र िलाया, जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर
नंगे पाऊँ आया प्रभु नंगे पाऊँ आया ।। भजो...

अजुतन का रथ रु्मने हाँका, भारर् भाइ लड़ाई
प्रभु भारर् भाइ लड़ाई, भगर्ों ंके खाडर्र प्रभु ने
िेरा नन्दानाई, प्रभु िेरा नन्दानाई ।। भजो...

िौपदी ने जब रु्म्हें पुकारा, साड़ी आन बढ़ाई
प्रभु साड़ी आन बढाई, नाम को ले कर डवष भी पी गयी
देखो मीराबाई, प्रभु देखो मीराबाई ॥ भजो...

नरसी का सब काम साँवारे, मुझको मर् डबसरारे

प्रभु मुझको मर् डबसरारे, जनम जनम की रे्रा डह सारंडग
रे्रा डहनाम पुकारे, प्रभु रे्रा डह नाम पुकारे ।। भजो . . .

(४३) मधुरिाकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हडसरं् मधुरं।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥१॥

विनं मधुरं िररं् मधुरं, वसनं मधुरं वडलरं् मधुरं ।
डिलरं् मधुरं भ्रडमरं् मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥२॥

वेणुमतधुरो रेणुमतधुरो, पाडणमतधुरः पादो मधुरः ।
नृतं्य मधुरं सखं्य मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥ ३ ॥

गीरं् मधुरं पीरं् मधुरं, भुकं्त मधुरं सुपं्त मधुरं ।
रूपं मधुरं डर्लकं मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥४॥

करणं मधुरं र्रणं मधुरं, हरणं मधुरं रमणं मधुरं ।
वडमरं् मधुरं शडमरं् मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥५ ॥

गुंजा मधुरा माला मधुरा, यमुना मधुरा विीी मधुरा।
सडललं मधुरं कमलं मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥६ ।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा, युकं्त मधुरं मुकं्त मधुरं।
दृिं मधुरं डशिं मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा, यडिमतधुरा सृडिमतधुरा।
दडलरं् मधुरं फडलरं् मधुरं, मधुराडधपरे्-रखलं मधुरम् ॥८॥

नामावली

डवडपन-डवहारी राधेश्याम,कुंज-डवहारी राधेश्याम।
बााँके-डवहारी राधेश्याम,देवकी-नन्दन राधेश्याम॥
गोडपका-वल्लभ राधेश्याम,राधा-वल्लभ राधेश्याम।
कृष्ण-मुरारी राधेश्याम,करुणा-सागर राधेश्याम॥
भखक्त-दायक राधेश्याम,शखक्त-दायक राधेश्याम।
भुखक्त-दायक राधेश्याम,मुखक्त-दायक राधेश्याम।।
सखच्चदानन्द राधेश्याम,सद्गुरु-रूप राधेश्याम।

सवतरूप श्री राधेश्याम, सवत-नाम श्री राधेश्याम॥
राधेश्याम राधेश्याम, राधेश्याम श्री राधेश्याम।
राधेश्याम राधेश्याम, राधेश्याम श्री राधेश्याम।।

(४४) सुनाजा सुनाजा सुनाजा कृष्णा

सुनाजा सुनाजा सुनाजा कृष्णा ।
रू गीर्ावाला ज्ञान सुनाजा कृष्णा ।।

डदखाजा डदखाजा डदखाजा कृष्णा ।
ओ माधुरी सी मूडर्त डदखाजा कृष्णा ।।

डपलाजा डपलाजा डपलाजा कृष्णा ।
ओ पे्रेम भरा प्याला डपलाजा कृष्णा ।।

खलाजा खलाजा खलाजा कृष्णा।
ओ माखन औ डमडश्र खलाजा कृष्णा ॥

लगाजा लगाजा लगाजा कृष्णा ।
मेरी नय्या को पार लगाजा कृष्णा ।।

सुनाजा सुनाजा सुनाजा कृष्णा ।
रूबाँसुरी की र्ान सुनाजा कृष्णा ॥ सुनाजा॥

(४५) कृष्ण कृष्णा मुकुन्दा जनादतना

कृष्ण कृष्णा मुकुन्दा जनादतना, कृष्ण गोडवन्दा नारायणा हरे।
अचुयुर्ानन्द गोडवन्द माधवा, सखच्चदानन्द नारायणा हरे ।। कृष्ण...

राम राम नरडसंहा पुरुषोत्तमा, राघवा राम नारायणा हरे।
रावणारर कोदण्ड राम रघुवरा, श्रीधरा राम नारायणा हरे ।। कृष्ण . . .

गरुड़ गमना कंसारर मधुसूदना, शेष शयना श्री नारायणा हरे।
मुरडल कृष्ण मुरारी मन मोहना, मदन गोपाला नारायणा हरे ॥ कृष्ण . . .

वासुदेव गोडवन्द दामोदरा, नन्द नन्दना नारायणा हरे।
वामना डवष्णु गौरी लक्ष्मी धरा, वेणुगोपाला नारायणा हरे ।। कृष्ण . . .

पद्मनाभा परमेशा सनार्ना, परम पुरुषा श्री नारायणाहरे।
पाणु्डरंगा डवठ्ठल पुरन्दरा, पुण्डरीकाि नारायणा हरे।।कृष्ण...

श्रीडनवासा अडनरुि धरणीधरा, अप्रमेयात्मा नारायणा हरे।
दीनबनु्धु भगवन्ता दयाडनधे, देवकीर्नया नारायणा हरे ।। कृष्ण ...

(४६) आना सुन्दर श्याम हमारे

आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीर्तन में।
आप भी आना, राधा जी को लाना।
आकर मुरली बजाना हमारे घर कीर्तन में । आना ॥

आप भी आना, शंकर जी को लाना।
आकर िमरू बजाना हमारे घर कीर्तन में ॥ आना ॥

आप भी आना, गोडपयों ंको लाना।
आकर रास रिना हमारे घर कीर्तन में ।। आना ॥

आप भी आना, ग्वालाओं ंको लाना।
माखन डमश्री खलाना हमारे घर कीर्तन में ।। आना ॥

आप भी आना, नारद जी को लाना।
आकर वीणा बजाना हमारे घर कीर्तन में ॥ आना ॥

आप भी आना, शबरी जी को लाना।
आकर बेर खलाना हमारे घर कीर्तन में ।। आना ॥

आप भी आना, सुदामा जी को लाना।
आकर र्न्दुल खलाना हमारे घर कीर्तन में ।। आना ॥

आप भी आना, ऊधव जी को लाना।
आकर ज्ञान सुनाना हमारे घर कीर्तन में ॥ आना ॥

आप भी आना, अजुतन जी को लाना।
आकर गीर्ा सुनाना हमारे घर कीर्तन में ।। आना ॥

आप भी आना, मीरा जी को लाना।
भखक्त का भजन सुनाना हमारे घर कीर्तन में ।।

आप भी आना, स्वामी जी को लाना।

आकर ध्यान डसखाना हमारे घर कीर्तन में ।। आना॥

(४७) गोडवन्द राधे गोपाल राधे

गोडवन्द राधे गोपाल राधे, राधा रमण हरर गोडवन्दराधे।
गोडवन्द कृष्णा गोपालाकृष्णा, राधा रमण हरर गोडवन्दकृष्णा।।

गोडवन्द रंगा गोपाल रंगा, राधा रमण हरर गोडवन्द रंगा।
गोडवन्द डवट्ठल गोपाल डवट्ठल, राधा रमण हरर गोडवन्दडवट्ठल॥

गोडवन्द रामा गोपाल रामा, राधा रमण हरर गोडवन्द रामा।
गोडवन्दा ब्रह्मा गोपाल ब्रह्मा, राधा रमण हरर गोडवन्द ब्रह्मा ।।

गुरुवार

ॐ ित्तात्रेयाय च दवद्महे
अदत्रतनयाय च धीमदह

तन्नो ि त्तः प्रचोयात् ।।

ेिानां च ऋषीणाँ च ि ुरुं कांचन सदन्नभम्।
बुन्तिभूतं दत्रलोकेशं तं नमादम बृहस्पदतम्॥

(४८) गुरु सुतुडर्ः

गुरुब्रतह्मा गुरुडवतष्णुः गुरुदेवो महेश्वरः। गुरुः सािार्
परं ब्रह्म तिै श्रीगुरवेनमः।।

ध्यानमूलं गुरोमूतडर्तः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोवातक्ं मोिमूलं गुरोः कृपा ॥

अज्ञानडर्डमरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
िुिुरुन्मीडलरं् येन तिै श्रीगुरवे नमः ।।

(४९) डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम्

सदा पावनं जािवीर्ीरवासं सदा स्वस्वरूपानुसन्धानशीलम्।
सदा सुप्रसन्नं दयालुं भजेऽहं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ।।१ ।।

हरेडदतव्यनाम स्वयं कीर्तयन्तं हरेः पादभखक्त सदा बोधयन्तम्।
हरेः पादपद्मस्थ भृगं भजेऽहं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ॥२ ॥

जराव्याडधदौबतल्य सम्पीडिर्ानां सदाऽऽरोग्यदं यस्य कारुण्यनेत्रम् ।
भजेऽहं समस्तार्तसेवाधुरीणं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ॥३॥

सदा डनडवतकल्पे खस्थरं यस्य डित्तं सदा कुखम्भर्ः प्राणवायुडनतकामम्।
सदा योगडनष्ठं डनरीहं भजेऽहं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ॥४॥

महामुिबन्धाडदयोगांगर्दिं सुषुम्नान्तरे डित्स्वरूपे डनमग्नम्।
महायोगडनिाडवलीनं भजेऽहं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ॥५॥

दयासागरं सवतकल्याणराडश सदा सखच्चदानन्दरूपे डनलीनम्।
सदािारशीलं भजेऽहं भजेऽहं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ॥६॥

भवाम्बोडधनौकाडनभं यस्य नेत्रं महामोहघोरान्धकारं हरन्तम्।
भजेऽहं सदा रं् महान्तं डनरान्तं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ॥७॥

भजेऽहं जगत्कारणं सत्स्वरूपं भजेऽहं जगद्व्यापकं डित्स्वरूपम् ।

भजेऽहं डनजानन्दमानन्दरूपं डशवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूडर्तम् ॥८॥

पिेद्यः सदा स्तोत्रमेर्् प्रभारे् डशवानन्दयोगीन्द्रनाडम्न प्रणीर्म्।
भवेत्तस्य संसारदुःखं डवनिं र्था मिोसाम्राज्यकैवल्यलाभः ॥९।।

(५०) राम डजनका नाम है

राम डजनका नाम है, अयोध्या डजनका धाम है।
ऐसे रघुनन्दन को, हमारा भी प्रणाम है।।

श्याम डजनका नाम है, गोकु ल डजनका धाम है।
ऐसे भखक्तदार्ा को, हमारा भी प्रणाम है।।

पाणु्डरंगा नाम है, पण्डररपुर धाम है।
ऐसे दया सागर को, हमारा भी प्रणाम है।

शंकर डजनका नाम है, काशी डजनका धाम है।
ऐसे मुखक्तदार्ा को, हमारा भी प्रणाम है।

वेंकटरमण नाम है, डर्रुमलडगरर धाम है।
ऐसे आपद्बान्धवको,हमाराभीप्रणामहै।

डशवानन्द नाम है, आनन्द कुटीर धाम है।
ऐसे सद्गुरुदेव को, हमारा भी प्रणाम है।।

(५१) देव-देव-डशवानन्द दीनबन्धो पाडह माम्

देव-देव-डशवानन्द दीनबन्धो पाडह माम्।
न्द्रि-वदन मन्दहास पे्रम-रूप रि माम् ।।

मधुर-गीर्-गान-लोल ज्ञान-रूप पाडह माम्।
समस्त-लोक-पूजनीय मोहनांग रि माम् ।।१।।

डदव्य-गंगा-र्ीर-वास दान-शील पाडह माम्।
पाप-हरण पुण्य-शील परम-पुरुष रि माम्।।

भक्त-लोक हृदय-वास स्वाडमनाथ पाडह माम्।
डित्स्वरूप डिदानन्द डशवानन्द रि माम् ॥२॥

(५२) गुरिुरणं भज िरणम्

गुरिुरणंभज िरणम्। सद्गुरु िरणंभवहरणम्।।
मानसभजरे गुरु िरणम्। भजरे मानसगुरिुरणम्॥
दुस्तरभवसागर र्रणम्। सद्गुरु िरणंभवहरणम्।।
गुरुमहाराज गुरु जय जय । परब्रह्मसद्गुरुजयजय।।
गुरुमहाराज गुरु जय जय। डशवानन्दसद्गुरुजयजय।।

(५३) जय गुरुदेव दयाडनधे

जयगुरुदेव दयाडनधे, भगर्न के डहर्कारी।
डशवानन्द जय मोह डवनाशक, भव बन्धन हारी ।। भगर्न के...

ब्रह्मा डवष्णु सदाडशव ने, गुरु मूरडर् धारी।
वेद पुराण करर् बखाना, गुरु की मडहमा भारी ।। भगर्न के ...

जप र्प र्ीरथ शम यम दान, गुरु डबना नहीं ं होवर् ज्ञान।
ज्ञान खड्ग से कमात काटे, गुरु नाम सब पार्क हारी ।। भगर्न के . . .

र्न मन धन सब अपतण कीजै, परमागडर् मिो पद लीजै।
सब के सहारा सद्गुरु नाम, अडवनाशी अडवकारी ।। भगर्न के . . .

(५४) पायो जी मैंने राम रर्न धन पायो

पायो जी मैंने राम रर्न धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सद्गुरु ।
डकरपा कर अपनायो । पायो जी ।।

जनम जनम की पूँजी पायी।
जग में सभी खोवायो । पायो जी ।।

खरि नहीं ं कोई िोर न लूटे।
डदन डदन बढ़र् सवायो ।। पायो जी ।।

सर् की नाव के वडटया सद्गुरु ।
भवसागर र्र आयो ।। पायो जी ॥

मीरा के प्रभु डगररधर नागर।
हरष हरष जस गायो ।। पायो जी ।।

(५५) बऱ्ा दे मिो का मार

बऱ्ादेमिोकामारग, गुरु मैं शरण में ऱ्ेरी ।।

जगर्के बीमेंनाना डकसम के पन्‌ हैं भारी।
सुनाऱ्ेहैंकथाअपनी, भटकऱ्े हो गयी देरी ।। बऱ्ा दे ॥

कोई मूरर्‌ पूजन को, बऱ्ाऱ्े होम करने को।
कोई ऱ्ीरथ के दशतन को, डफराऱ्े हैं सदा फेरी ।। बऱ्ा दे ॥

डकऱ्ाबें धमत िाित की, हजारों ंबााँकिर देखा।
डमटे संशय नहीं ंमन का, अकल जंजाल में मेरी ॥ बऱ्ा दे ॥

सकल दुडनया में है पूरण, सुना मैं रूप ईश्वर का।
वो ब्रह्मानन्द डबन देखे, डमटे नहीं ंभरमना मेरी ।। बऱ्ा दे ॥

(५६) हरर ॐ राम सीऱ्ा राम।

हररॐ राम सीऱ्ा राम। हरर ॐ कृष्ण राधे श्याम।।
हररॐ राम सीऱ्ा राम । हरर ॐ कृष्ण राधे श्याम॥

(५७) अगर है ज्ञान को पाना

अगर है ज्ञान को पाना, ऱ्ो गुरु की जा शरण भाई ।।

जटा डसर फे र खाने से, भि र्न में रमाने से।
सदा फल मूल खाने से, कभी नहीं ं मुखक्त हो पाई।। अगर ॥

बने मूरर्‌ पुजारी हैं, ऱ्ीरथ यात्रा डपयारी है।
करे व्रर्‌ नेम भारी है, भरम मन का डमटे नाहीं ं ॥ अगर ॥

कोडट सूरज शडश ऱ्ारा, करे परकाश डमल सारा ।
डबना गुरु घोर अाँधेरा, न प्रभु का रूप दरशायी ।। अगर ॥

ईश सम जान गुरु देवा, लगा र्न मन करो सेवा।
ब्रह्मानन्द मिो पद मेवा, डमले भव बन्ध कट जायी ।। अगर ॥

नामावली

हरर ॐ जयजयगुरु देवा।

हरर ॐ जय जय गुरु देवा॥
रर ॐ जय जय गुरु नाथा।
हरर ॐ जय जय गुरु नाथा।।

(५८) भव-सागर-र्ारण-कारण हे

भव-सागर-र्ारण-कारण हे, रडव-नन्दन-बन्धन-खण्डन हे।
शरणागर्-डंकंकर दीनमने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ।। हृ

डद-कन्दर र्ामस भास्कर हे, र्ुम डवष्णु प्रजापडर्, शंकर हे।
परब्रह्म परात्पर वेद बने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।

मन-वारण कारण-अंकुश हे, नर-त्राण करे हररिपुष हे।
गुण-गान-परायण देव गणे, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥

कुल-कुण्डडलनी भव-भंजक हे, हृडद-ग्रखन् डवदारण-कारण हे।
मडहमा र्व गोिर शुिमने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।

अडभमान-प्रवाह-डवमदतक हे, अडर्दीन-जने र्ुम रिक हे।
मन कंडपर् वंडिर् भखक्त धने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।

ररपुसूदन मंगलनायक हे, सुख-शाखन्त वराभय दायक है।
त्रयर्ाप हरे र्व नाम गुणे, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥
र्वनाम सदा सुखसाधक हे, पडर्र्ाधम मानव-पालक हे।
मममानस िंिल राडत्र-डदने, गुरुदेव दयाकर दीनजने ॥

जयसद्गुरु ईश्वर-प्रापक हे, भवरोग डवकार डवनाशक है।
मनलीन रहे र्व श्री िरणे, गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।

(५९) ॐ गुरुनाथ जय गुरुनाथा

ॐगुरुनाथ जय गुरुनाथा।
जयगुरुनाथ डशव गुरुनाथा।।

जयगुरुनाथ जगद्गुरुनाथा।
जगद्गुरुनाथ परं गुरुनाथा।।

परं गुरुनाथ सद्गुरुनाथा ।
सद्गुरुनाथ जय गुरुनाथा ।।

सखच्चदानन्द गुरु जय गुरु जय गुरु।
अजर अमर गुरु जय गुरु जय गुरु।।

शुक्रवार

ॐ महालक्ष्म्यै च दवद्महे
दवष्णुपत्न्यै च धीमदह
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोयात् ।।

दहमकुन्दमृर्णालाभं िैत्यानां परमं िुरुम्।
सवतशास्त्रप्रवक्तारं भितवं प्रर्णमाम्यहम्।।

(६०) देवी सुतुडर्ः

सवत-मंगल मांगल्ये डशवे सवातथत साडधके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरर नारायडण नमोऽसुतुरे्॥

शरणागर् दीनार्त, पररत्राण परायणे।
सवतस्याडर्त हरे देडव, नारायडण नमोऽसुतुरे्॥

या देवी सवतभूरे्षु मार्ृरूपेण संखस्थर्ा ।
नमस्तसै्यै नमस्तसै्यै नमस्तसै्यै नमो नमः ।।

या देवी सवतभूरे्षु दयारूपेण संखस्थर्ा ।
नमस्तसै्यै नमस्तसै्यै नमस्तसै्यै नमो नमः ।।

या देवी सवतभूरे्षु शाखन्तरूपेण संखस्थर्ा ।
नमस्तसै्यै नमस्तसै्यै नमस्तसै्यै नमो नमः ।।

(६१) आडद डदव्य ज्योडर्

आडद डदव्य ज्योडर् महा काडलमााँनमः।
मद शुम्भ मडहष मडदतडन महाशक्तयेनमः।।

ब्रह्म डवषुणु डशवस्वरूप तं्व न अन्यथा ।
ि‍िरिरस्य पाडलका नमो नमः सदा ।।
आडद डदव्य ज्योडर्...

(६२) हे वीणा वाडदनी देवी

हेवीणा, हे वीणा वाडदनी देवी,
र्ुम्हारी जय हो, हो जय हो ।
हो जय हो, जय जय जय जय जय हो,
देवी र्ुम्हारी जय हो ।। हे वीणा ।।

डबी हो कर मां र्ुम शुभ ग्रन् सजाये,
पढ़ पिा हमारा हृदय डशु बन जाये।
जागे नूर्न ज्ञान प्राण में अनुपम,
र्न बने सबल मन डनमतल और डनभतय हो ।। हे वीणा।।

हे हंस वाडहनी मन को हंस बनाओ,
मधुमय श्वेर् कमल पर डिाो गाओ।
पाकर मां वरदान र्ुम्हारा अनुपम,
यह जीवन सरल सरस सुन्दर सुखमय हो ।। हे वीणा।।

(६३) गौरी गौरी गंगे राजेश्वरी

गौरी गौरी गंगे राजेश्वरी, गौरी गौरी गंगे भुवनेश्वरी।
गौरी गौरी गंगे माहेश्वरी, गौरी गौरी गंगे मार्ेश्वरी ।।

गौरी गौरी गंगे महाकाली, गौरी गौरी गंगे महालक्ष्मी।
गौरी गौरी गंगे पावतर्ी, गौरी गौरी गंगे सरस्वर्ी ॥

राम हरे डसया राम राम, राम हरे डसया राम राम।
कृष्ण हरे राधे श्याम श्याम, कृष्ण हरे राधे श्याम श्याम॥

(६४) िलो मन गंगा यमुना र्ीर

लिो मन गंगा यमुना र्ीर,
गंगा यमुना डनमतल पानी।
शीर्ल होर् शरीर ।। िलो मन ।

मोर मुकुट पीर्ाम्बर शोभे ।
कुण्डल झलकर् हीर ।। िलो मन ॥

बंशी बजावर् गावर् गाना।
संग डलये बल वीर ।। िलो मन ।।

मीरा के प्रभु डगररधर नागर।
रिण कमल पर सीर । िलो मन ॥

नामावली

गंगाराडण गंगाराडणगंगाराडण पाडह माम्।
भाडगरथी भाडगरथीभाडगरथी रि माम्।।

(६५) हे डगररधर गोपाला

हे डगररधर गोपाला,
हे डगररधर गोपाला।
हे डगररधर गोपाला ।।

माधव मुरहर मधुर मनोहर ।
डगररधर गोपाला ।। हे डगररधर ।।

नन्द कु मारा सुन्दराकारा,
बृन्दावन संिारि, मुरलीलोला।
मुडनजन पाला ।। हे डगररधर ।।

कौसुतुभहारा, मौखक्तकाधारा,
राधा हृदय डबहारी, भक्तिोरा।
बाल गोपाला डगररधर गोपाला।।हे डगररधर ।।

हे नन्दलाला, गोपररपाला,
अगडणर् गुण शीला, रास डवलोला।
र्ुलसी माला ॥ हे डगररधर ।।

हे अवर्ारे, नन्द दुलारे,
राखो लाज हमारे, कुंजडबहारी।
कृष्ण मुरारी ।। हे डगररधर।।

नामावली

ईश्वरी, माहेश्वरी, परमेश्वरी पाडह माम्।
राजेश्वरी, भुवनेश्वरर, मार्ेश्वरर रि माम् ॥

राज राजेश्वरी, राज राजेश्वरी, राज राजेश्वरी पाडहमाम्।
डत्रपुरसुन्दरर डत्रपुरसुन्दरर डत्रपुरसुन्दरर रि माम्।।

(६६) लगाले प्र्रेम ईश्वर से

लगाले प्र्रेम ईश्वर से, अगर रू मिो िाहर्ा है ।। अगर ॥

रिा उसने जगर् सारा, करे वो पालना सबकी।
वही माडलक है दुडनया का, डपर्ा मार्ा डवधार्ा है। अगर ॥

नहीं ः पार्ाल के अन्दर, नहीं ः आकाश के ऊपर।
सदा वो पास है र्ेरे, कहाँ रू ढूँढ़न को जार्ा है। अगर ॥
करो जप नेम र्प भारी, रहो जा कर सदा वन में।
डबना सद्गुरु की संगर् से, नहीं ः वो डदल में भार्ा है । अगर ॥

पड़े जो शरण में उसकी, छोड़ दुडनया के लालि को।
वो ब्रह्मानन्द डनश्चय से, परम सुख धाम पार्ा है। अगर ॥

नामावली

हरी ॐ रामसीर्ा राम।
हरी ॐ कृष्णराधे श्याम।।

हमर्ोसीर्ाराम कहेंगे।
हमर्ोराधेश्याम कहेंगे।।

हम र्ो राधेश्याम कहेंगे।
हम र्ो सीर्ाराम कहेंगे।

(६७) अगर है प्र्रेम दशतन का

अगर है प्र्रेम दशतन का, भजनसे प्रीडर् कर प्यारा ॥ अगर॥

छोड़कर काम दुडनया के, रोक डवषयों ंसे मन अपना ।
जीर्कर नीदं आलस को, रहो एकान्त में न्यारा ॥ अगर ॥

बैि आसन जमा करके, त्याग मन के डविारों ंको।
देख भृकुटी में अन्दर से, िमकर्ा है अजब र्ारा। अगर ॥

कभी डबजली कभी िन्दा, कभी सूरज नजर आवे।
कभी डफर ध्यान में भासे, ब्रह्म ज्योडर् का िमकारा ।। अगर ।।

डमटे सब पाप जन्मों ंके, कटे सब कमत के बन्धन।
वो ब्रह्मानन्द में होवे, लीन मन छोड़ संसारा । अगर ॥

(६८)जय दुगे दुगतडर् परर हाररडण

जय दुगे दुगतडर् परर हाररडण ।
शुम्भ डवदाररडण मार् भवानी ।। जय ।।

आडद शखक्त पर ब्रह्म स्वरूडपडण ।
जग जननी िहुाँ वेद बखानी ।। जय ।।

ब्रह्मा डशव हरर अिेतन कीनो ।
ध्यान धरर् सुर नर मुडन ज्ञानी ।। जय।।

अि भुजा कर खड्ग डबराजे।
डसंह सवार सकल वर दानी ।। जय ॥

ब्रह्मानन्द शरण में आयो।
भवभय नाश करो महाराणी ।। जय ।।

नामावली

ॐ शखक्त ॐ शखक्तॐशखक्त पाडह माम्।
ब्रह्म शखक्त डवषुणु शखक्तडशवशखक्त रि माम्॥

(६९) भवान्यिकम्

न ɪ्ारो न मार्ा न बन्धुनत दार्ा,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ात।
न जाया न डवद्या न वृडत्त-मतमैव,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन॥१॥

भवाब्धा-वपारे महादु:खभीरुः
पपार् प्रकामं प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसार-पाश-प्रबिः सदाहं,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ॥ २॥

न जानाडम दानं न ि ध्यान योगम्,
न जानाडम र्न्त्रं न ि स्तोत्रं-मन्त्रम्।
न जानाडम पूजां न संन्यास-योगं,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ॥ ३॥

न जानाडम पुण्यं न जानाडम र्ीथं,
न जानाडम मुखक्त लयं वा कदाडिर् ।
न जानाडम भखक्तं व्रर्ं वाडप मार्ः,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ॥ ४॥

कुकमी कुसंगी कुबुखिः कुदासः,
कुलाार-हीनः कदाारलीनः ।
गुरुदेव कुटीर में भजन-कीर्तन
कुदृडिः कुवाक्-प्रबन्धः सदाहं,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ॥ ५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं,
डदनेशं डनशीथेश्वरं वा कदाडिर् ।
न जानाडम िान्यर् सदाहं शरण्ये,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ॥ ६॥

डववादे डवषादे प्रमादे प्रवासे,
जले िानले पवतर्े शत्रुरु-मध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाडह,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ॥ ७॥

अनाथो दररि जरा-रोग-युक्तो,
महाक्षीण-दीनः सदा जाड्य-वक्त्रः ।
डवपत्तौ प्रडविः प्रणिः सदाहं,
गडर्-सं्त्वं गडर्-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ॥ ८॥

(७०) अम्ब परमेश्वरर अखलाण्डेश्वरर

अम्ब परमेश्वरर अखलाण्डेश्वरर ।
आडद परा शखक्त पालय माम् ॥ अम्ब ॥

जय जय दुगे जय मार्रारा।
जय जगदम्बे सुख आधारा । अम्ब ॥

दुःख डवनाडशडन दुगात जय जय।
काल डवनाडशडन काली जय जय ॥ अम्ब ॥

उमा रमा ब्रह्माणी जय जय,
राधा रुखिडण सीर्ा जय जय ।
वाणी वीणा पाणी जय जय ॥ अम्ब ॥

नामावली

राज राजेश्वररपालयमां
डत्रपुरसुन्दरर पालयमां,
मधुर मीनिीपालयमां।
कंडि कामिीपालयमां,
काशी डवशालाडिपालयमां।

शडनवार

ॐ भूभुतवः स्वः तत्सदवतुवतरेण्यं
भिो िेवस्य धीमदह
दधयो यो नः प्रचोयात् ।।

नीलांजनसमाभासं रदवपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामातातण्डसम्भूतं तं नमादम शनैरम् ॥

(७१) राम सुतुडर्:

वैदेही सडहर् सुरुिमर्ले हैमे महामण्डपे,
मध्येये पुष्पकमासने मडणमये वीरासने संखस्थर्म्।
अग्रेने वियडर् प्रभंजनसुर्रे र्ि मुडनभ्यः परं,
व्याख्यान्तं भरर्ाडदडभः पररवृर् रामं भजे श्यामलम् ॥

आपदामपहर्ातरं दार्ारं सवत सम्पदाम्।
लोकाडभरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।
मनोजवं मारुर् रुल्य वेगं, डजर्ेखन्द्रयं बुखिमर्ां वररष्ठम्।
वार्ात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीरामदूर् डशरसा नमाडम ॥

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं, र्त्र र्त्र कृर्मस्तकांजडलम्।
बाष्पवारर पररपूणतलोिनं, मारुडर् नमर् रिसान्तकम् ।।

(७२) रामिन्द्र रघुवीर, रामिन्द्र रणधीरा

रामिन्द्र रघुवीर, रामिन्द्र रणधीरा।
रामिन्द्र रघुनाथ, रामिन्द्र जगन्नाथ।।

रामिन्द्र रघुराम, रामिन्द्र परंधाम।
रामिन्द्र मम बन्धो, रामिन्द्र दयाडसन्धो ।।

रामिन्द्र मम दैवं, रामिन्द्र कुलदैवम्।
रामिन्द्र रघुवीर, रामिन्द्र रणधीर॥

(७३) राम राम राम राम

रामराम राम राम राम नाम र्ारकं ।

राम कृष्ण वासुदेव भखक्त मुखक्त दायकम्॥

जानकीमनोहरं सवत लोक नायकं,
शंकराडद सेव्यमान डदव्य नाम कीर्तनम्।
शंकराडद सेव्यमान पुण्य नाम कीर्तनम् ॥

(७४) पे्रम मुडदर् मन से कहो

पे्रम मुडदर् मन से कहो राम राम राम । श्री राम
राम राम, श्री राम राम राम ।।

पाप कटे दु:ख डमटे, लेर् राम नाम ।
भव समिु सुखद नाव, एक राम नाम ॥ श्रीराम ॥

परम शाखन्त सुख डनधान डदव्य रांम नाम ।
डनराधार को अधार, एक राम नाम ॥ श्रीराम ॥

परम गोप्य परम इिमन्त्र राम नाम ।
सन्त हृदय सदा बसर् एक राम नाम ।। श्रीराम ॥

महादेव सर्ई जपर् एक राम नाम।
काशी मरर् मुखक्त करर् कहर् राम नाम ॥ श्रीराम॥
मार् डपर्ा बनुधु सखा सब ही राम नाम।
भक्त जनन जीवन धन एक राम नाम ॥ श्रीराम ॥

(७५) सीर्ाराम कहो

सीर्ाराम कहो राधे श्याम कहो ।
सीर्ाराम कहो राधे श्याम कहो । सीर्ा ।।

सीर्ाराम डबना सुख कौन करे।
राधे श्याम डबना दु:ख कौन हरे ।। सीर्ा ।

सीर्ाराम डबना उिार नहीं।ं
राधे श्याम डबना बेड़ा पार नहीं ं।। सीर्ा ।।

सीर्ाराम डबना सुख स्वप्न नहीं।ं
राधे श्याम डबना कोई अपना नहीं ं॥ सीर्ा॥

(७६) भजो रे भय्या राम गोडवन्द हरे

भजो रे भय्या राम गोडवन्द हरे।
राम गोडवन्द हरे, राम गोपाल हरे ।। भजो रे ।।

जप र्प साधन कछु नडहं लागर्।
खरिर् नहीं ं गिरी ।। भजो रे ।

सन्तर् सम्पद सुख के कारण।
जैसे भूल परी ॥ भजो रे ॥

कहर् कबीर जो मुख राम नहीं।ं
सो मुख धूल भरी ॥ भजो रे॥

(७७) राम कृष्ण हरर, मुकुन्द मुरारी

रामकृष्ण हरर, मुकुन्द मुरारी।
पाणुडुरंग पाणुडुरंग पाणुडुरंग हरर ।। राम ॥

मकर कुण्डल धारी, भक्त बनुधु शौरी।
मुखक्तदार्ा शखक्तदार्ा डबट्ठल नरहरी ।। राम ॥

दीन बनुधु कृपा डसनुधु श्रीहरी श्रीहरी।
पावनांगा हे कृपांगा, वासुदेव हरी ।। राम ॥

रुुलडस हार कन्धरा, भक्त हृदय मखन्दरा।
मन्दराडि धरा मुकुन्दा, इखन्दरेश श्रीहरी ।। राम॥

जगत्रय जीवना, केशव नारायणा ।
माधवा जनादतना, आनन्द घन हरी ॥ राम ॥

राजस सुकुमारा, मोहनाकारा।
करुणा सागरा, अचुयुर्ा श्रीहरी ।।राम ॥

पुण्डरीक वरदा, पण्डररनाथा शुभदा ।
राम ॥अण्डज वाहन कृष्ण, पाणुडुरंगा हरी ।।

ज्ञानदेव सन्सुतुर्ा नामदेव कीडर्तर्ा।
रुुकाराम पूडजर्ा, दास केशव सनुत्रुर्ा ।।राम ॥

जयजय डवठ्ठल पाणुडुरंगा जयहरर डवठ्ठल पाणुडुरंगा॥

(७८) राम न डबसार बन्दे

राम न डबसार बन्दे,
खाली आना खाली जाना।

धन यौवन का नाडह डिकाना,
इसमें न कुछ सार बन्दे ।। राम ॥

यह दुडनया दो डदन का मेला,
न रू डकसी का न कोई ऱेरा।
जीवन है डदन ि◌ार बन्दे ।। राम ।।

जग में फूल खले हैं रंगीले,
सुन्दर प्यारे और रसीले।
मर् कर कोई प्यार बन्दे ।। राम ।।

भूले राही सुनरे् जाना,
झ्रूि जग में न भरमाना।
ऱेरी है मंडजल पार बन्दे । राम ।।

(७९) राम नाम जपना क्ों ◌ंछोड़ डदया

रामनामजपनाक्ों ◌ंछोड़ डदया,
क्रोधनछोड़ाझ्रूिनछोड़ा।
सत्यविनक्ों ◌ंछोड़डदया ।। राम नाम ।।

झ्रूिजगमेंडदललिाकर,
असलवर्नक्ों ◌ंछोड़डदया।
कौड़ीकोरूखूबसम्भाला,
लालरर्नक्ों ◌ंछोड़डदया । राम नाम ॥

डजससुडमरनसेअडर् सुख पावे,
सोसुडमरनक्ों ◌ंछोड़ डदया।
कालसेएकभगवान् भरोसे,
र्नमनधनक्ों ◌ंछोड़ डदया ।। राम नाम॥

राम नाम जपना, कृष्ण नाम जपना।
हरर नाम जपना, क्ों ंछोड़ डदया ।। राम नाम ।।

गोडवन्द हरे, गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीन दयाल हरे ।।

(८०) श्री रामिन्द्र कृपालु भजु मन

श्रीरामिन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम् ।
नवकंज-लिोन कंज-मुख कर-कंज पद कंजारुणम् ॥ हरण भव भय...

कन्दपत अगडणर् अडमर् छडब नवनील-नीरद सुन्दरम्।
पट पीर् मानहु र्डड़र् रुडि शुडि नौडम जनक सुर्ावरम् ।। हरण भव भय . . .

भजु दीनबनु्धु डदनेश दानव-दैत्यवंश-डनकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलिन्द दशरथ-नन्दनम् ।। हरण भव भय...

डसर मुकुट कुण्डल डर्लक िारु उदारु अंग डवभूषणम्।
आजानुभुज शर-िाप-धर संग्राम-डजर्-खरदूषणम् ॥ हरण भव भय...

इडर् वदडर् रुलसीदास शंकर-शेष-मुडन-मन-रंजनम्।
मम हृदय-कंज डनवास कुरु कामाडद खलदल-गंजनम् ।। हरण भव भय . . .

मनु जाडहं रािेउ डमडलडह सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुणा डनधान सुजान सीलु सनेहु जानर् रावरो ।। हरण भव भय...

(८१) आंजनेय वीरा हनुमन्त

आंजनेय वीरा हनुमन्त शूरा,
वायु कुमारा वानर धीरा।

श्रीराम दूर्ा जय हनुमन्ता,
जय जय सीर्ा राम की।
जय बोलो हनुमान् की ।।

राम लक्ष्मण जानकी,
जय बोलो हनुमान् की ।।॥
जय डसया राम जय, जय डसया राम ।
जय हनुमान् जय, जय हनुमान् ।।

(८२)एकादशी का नाम-रामायण

शिु-ब्रह्म परात्परराम। शेष र्ल्प-सुख-डनडिर्राम।
ण्डि-डकरण-कुल-मण्डनराम।
कौशल्या-सुख-वितन राम। घोर-र्ाड़का-घार्क राम। कौडशक-मख-संरिक राम । गौर्म-मुडन समूपूडजर्राम। नाडवक-धाडवर्-मृदु-पद राम।
डवदेह-मानस रंजकराम।
सीर्ाडपतर्-वर माडलकराम। भागतव-दपत-डवनाशक राम। अगडणर्-गुण गण-भूडषर्राम। राकिान्द्र-समानन राम। डप्रय-गुह-डवडनवेडदर् पद राम। भरद्वाज-मुखानन्दक राम। दशरथ-संर्ं डिखन्तर्राम। डवरडिर्-डनज-डपरू कमतक राम। दण्डक-वन-जन पावन राम। शरभंग-सुर्ीक्ष्णाडिर्र् राम। गृध्राडधप-संसेडवर् राम । शूपतणखाडर्त-डवधायक राम। सीर्ाडप्रय-हररणानुग राम। अपहृर्-सीर्ान्वेषक राम । शबरीदत्त-फलाशन राम। हनुमर्-सेडवर्-डनजपद राम। गडवतर्-वाडल-संहारक राम। 'डहर्कर-लक्ष्मण-संयुर् राम। र्ृडर्-डवघ्न-ध्वंसक राम।
दिु-दशानन-दूडषर् राम।
सीर्ावेडदर्-काकावन राम। कडपवर-विनाश्वाडसर् राम। वानर-सैन्य-समावृर् राम। डवभीषणा भयदायकराम।
कुम्भकणत-डशरश्छेदकराम।
अडहमडह रावण-मारणराम। डवडध भव मुख सुरसंसुुर्राम। सीर्ा दशतन-मोडहर्राम।

कालात्मक परमेश्वरराम।।
ब्रह्माद्यमरगण-प्राडथतर् राम ।।
श्रीमद्दशरथ-नन्दन राम ।।
डवश्वाडमत्र-डप्रय-धन राम ॥
मारीीाडदडनपार्कराम।।
श्रीमदहल्योिारक राम ।।
सुर-मुडन-वर-गण संसुुर् राम ॥
डमडथला-पुर-जन-मोदक राम ।।
त्र्यम्बक-कामुतक-भंजकराम।।
कृर्-वैवाडहक-कौरुुकराम।।
श्रीमदयोध्या-पालक राम ।।
अवनीर्नया-काडमर् राम ।।
डपरूवाक्ाडश्रर्-कानन राम ।।
र्क्षाडलर्-डनज मृदु-पदराम।।
डित्रकू टाडि-डनके र्न राम ।।
कै के यी-र्नयाडिर्र् राम ।।
भरर्ाडपतर्-डनज-पादुक राम ।।
दिु-डवराध-डवनाशन राम ।।
अगस्त्यानुग्रह-वडधर्र् राम ।।
पंविटी-र्ट-सुखस्थर् राम ।।
खरदूषण-मुख-सूदक राम ।।
माररिाडर्त-कृदाशुगराम।।
गृध्राडधप-गडर्दायक राम ।।
कबन्ध-बाहुच्छेदक राम ।।
नर् सुग्रीवाभीदराम।।
वानर-दूर्-प्ेरेषक राम ॥
कडपवर-संर्ं-संर्ि राम ।।
सीर्ा –प्राणाधारक राम।।
डशि-हनुमद्-भूडषर्राम।।
कृर्ि–्ड़ामडण-दशतनराम॥
रावण-डनधन-सुप्रखस्थर् राम ।।
शोडषर् सररदीशाडथतर्राम॥ पवतर्-सेरु-डनबन्धक राम ।। रिास-संघ-डवमदतक राम ।। संहर्-दशमुख-रावण राम ।। खखस्थर्-दशरथ-वीडिर् राम ॥
अडभडषक्त-डवभीषण-नर्राम॥

पुष्पकयानारोहण राम।
भरर् प्राणडप्रय-कारकराम।
सकल स्वीय समावृर्राम।
पट्टाडभषेकालंकृर्राम।
डवभीषणाडितर् रंजक राम।
सकल जीव-संरिकराम।

भरद्वाजाडभडनषेवन राम ।।
साकेर् पुरी भूषणराम।।
रत्नलसर्-पीिखस्थर् राम ।।
पाडथतव कुल सिाडनर्राम।।
कीशकु लानुग्रहकर राम ।।
समस्त-लोकोिारक राम ।।

नामावली

राम राम जयराजाराम।
राम राम जयसीर्ाराम।।

श्रीराम जय रामजयजयराम।
श्रीराम जय रामजयजयराम।।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृ ष्ण हरे कृ ष्ण कृ ष्ण कृ ष्ण हरे हरे ।।

गौरी शंकर गौरी शंकर,शंकरशंकरगौरीगौरी।
उमा शंकर उमा शंकर,शंकरशंकरउमाउमा।।

ॐ गुरु नाथाजयगुरुनाथा,
श्री गुरु नाथाडशवानन्दा।

ॐ गुरु नाथाजयगुरुनाथा,
श्रीगुरु नाथाडशवानन्दा।।

(८३) Come here my dear

Come here my dear कृष्ण कन्ाई।
मैंने र्ेरे डलए हृदय अन्दर Building बनाई।। Come ।।

र्ेरे डलए बहुर् सारा खाना बनाई।
दूध दही Butter डमश्री सारा मंगाई ।।

Come Soon Come Soon कृष्ण कन्ाई।
मैंने र्ेरे डलए हृदय अन्दर Building बनाई।। Come ।।

र्ेरे डलए रोज रोज आँसु बहाई।

Come tomyHouse, तुझे आरडर् डदखाऊँ ॥ Come ||

Why Late,soLate करर्े कन्ाई।
मैंने र्ेरे डलए हृदय अन्दर Building बनाई ॥ Come ||

(८४) हे प्रभो आनन्द दार्ा

हेप्रभोआनन्द दार्ा ज्ञान हमको दीडजए।
शिीसारेदुगुतणों ंको दूर हमसे कीडजए। हे प्रभो...

लीडजए हमको शरण में हम सदािारी बनें।
ब्रह्मिारी, धमत रिक, वीर व्रर् धारी बनें । हे प्रभो ...

प्ेरेम से हम गुरुजनों ंकी डनत्य ही सेवा करें।
सत्य बोलें, झूि त्यागें, मेल आपस में करें । हे प्रभो ...

डनन्दा डकसी की हम डकसी से भूल कर भी ना करें।
डदव्य जीवन हो हमारा यश र्ेरा गाया करें । हे प्रभो...

८५.श्रीगंगास्तोत्रम्

देडव सुरेश्वरर भगवडर् गंगे डत्रभुवनर्ाररडण र्रलर्रंगे।
शंकरमौडलडवहाररडण डवमले मम मडर्रास्तां र्व पदकमले ॥ १॥

भागीरडथ सुखदाडयडन मार्स्तव जलमडहमा डनगमे ख्यार्ः ।
नाहं जाने र्व मडहमानं पाडह कृपामडय मामज्ञानम् ॥ २॥

हररपदपाद्यर्रंडगडण गंगे डहमडवधुमुक्ताधवलर्रंगे।
दूरीकुरु मम दुष्कृडर्भारं कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥ ३॥

र्व जलममलं येन डनपीर्ं परमपदं खलु र्ेन गृहीर्म्।
मार्रगंगे त्वडय यो भक्तः डकल र्ं ्रिषटुं न यमः शक्तः ।॥ ४॥

पडर्र्ोिाररडण जाडव गंगे खखण्डडर्गररवरमखण्डर्भंगे।
भीष्मजनडन हे मुडनवरकन्ये पडर्र्डनवाररणी डत्रभुवनधन्ये ॥ ५॥

कल्पलर्ाडमव फलदां लोके प्रणमडर् यस्त्वां न पडर्र् शोके।
पारावारडवहाररडण गंगे डवमुखयुवडर्कृर्र्रलापांगे ॥ ६॥

र्व िेन्मार्ः स्रोर्ःस्नार्ः पुनरडप जिरे सोऽडप न जार्ः ।
नरकडनवाररडण जाडव गंगे कलुषडवनाडशडन मडहमोत्तुंगे ॥ ७॥

पुनरसदंगे पुण्यरँगे जय जय जिडव करुणापांगे।
इन्द्रमुकुटमडणराडजरि्रणे सुखदे शुभदे भृत्यशरणे्ये ॥ ८॥

रोगं शोकं र्ापं पापं हर मे भगवडर् कुमडर्कलापम्।
डत्रभुवनसारे वसुधाहारे त्वमडस गडर्मतम खलु संसारे ॥ ९॥

अलकानने्दे परमानने्दे कुरु करुणामडय कार्रवन्दे्ये।
र्व र्टडनकटे यस्य डनवासः खलु वैकुणे्ठे र्स्य डनवासः ॥ १० ॥

वरडमह नीरे कमिो मीनः डंकं वा र्ीरे शरटः ि्ीणः ।
अथवा श्वपिो मडलनो दीनस्तव न डह दूरे नृपडर्कुलीनः ।। ११ ।

भो भुवनेश्वरर पुणे्ये धने्ये देडव िवमडय मुडनवरकने्ये।
गंगास्तवडममममलं डनतं्यं पिडर् नरो यः स जयडर् सत्यम् ॥ १२॥

येषां हृदये गंगाभखक्तसे्तेषां भवडर् सदा सुखमुखक्तः ।
मधुराकान्तापज्झडटकाडभः परमानन्दकडलर्लडलर्ाडभः ।। १३॥

गंगास्तोत्रडमदं भवसारं वांडछर्फलदं डवमलं सारम्।
शंकरसेवकशंकररडिरं् पिडर् सुखी स्तव इडर् ि समाप्तः ॥ १४॥

।।इदत श्रीमचं्छंकराचायतदवरदचतं श्रीिििति्रं समूपूर्णतम् ॥

नामावली

गोडवन्द जय जय गोपाल जय जय ।
राधा रमण हरर गोडवन्द जय जय ।।
जय डसया राम जय जय डसया राम ।
जय हनुमान जय जय हनुमान ।।

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान की।
श्री रामजयरामजयजयराम।।

श्री गंगा-आरर्ी

ॐजय गंगे मार्ा, मैया जय गंगे मार्ा ।
जोनर र्ुमको ध्यार्ा, जो नर र्ुमको ध्यार्ा,
मनवांडछर् फल पार्ा ।। ॐ जय...

न्द्रि-सी ज्योडर् र्ुम्हारी, जल डनमतल आर्ा,
मैया जल डनमतल आर्ा,
शरण पड़े जो र्ेरी, शरण पड़े जो र्ेरी,
सो नर र् जार्ा ।। ॐ जय...

पुत्र सगर के र्ारे, सब जग को ज्ञार्ा,
मैया सब जग को ज्ञार्ा,
कृपा-दृडि र्ुम्हारी, कृपा-दृडि र्ुम्हारी,
डत्रभुवन सुखदार्ा ।। ॐ जय...

एक ही बार जो र्ेरी, शरणागर् आर्ा,
मैया शरणागर् आर्ा,
यम की त्रास डमटा कर, यम की त्रास डमटा कर,
परम गर्ी पार्ा ।। ॐ जय...

आरर्ी मार् र्ुम्हारी, जो कोई नर गार्ा,
मैया जो कोई नर गार्ा,
दास वही सहज में, भक्त वही सहज में।
मुखक्त को पार्ा ।। ॐ जय...

'गुरुदेव कुटीर'

पुण्य सडलला गंगा के र् पर अवखस्थर् 'गुरुदेव कुटीर' प्रडर्डदन सायं संकीर्तन की डदव्य लहररयों ्से आपूररर् हो जार्ी है। पुरवासी, अडर्डथ, अभ्यागर्, बाल-वृि, नर-नारी सभी उपखस्थर् जन आत्म-डवभोर हो उिर्े हैं। ऐसे प्रभावी डदव्य संकीर्तन

का शुभारम्भ हुआ कैसे ? उत्तर आप भी जाडनए- यह सब समन्वय योगीश्वर संकीर्तन-सम्राट् श्री सद्गुरुदेव स्वामी डशवानन्द जी महाराज की अनुपम संकल्प-शखक्त का ही प्रत्यि स्वरूप है जो डक इस पुस्तक से आपको प्रत्यि अनुभव हो जायेगा।